# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मई २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ५
मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

## "सत्यमेव जयते" सीरियल

## मारवाड़ी सम्मेलन के मूल उद्देश्यों

☆ दहेज-दिखावा, आडम्बर एवं फिजूलखर्ची,
कन्या भ्रूण-हत्या आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एवं

☆ नारी-सशक्तिकरण के पक्ष में

## आमिर खान का सशक्त एवं प्रभावशाली अभियान

*Caring for Land and People...*

# RUNGTA MINES LIMITED

*Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors*

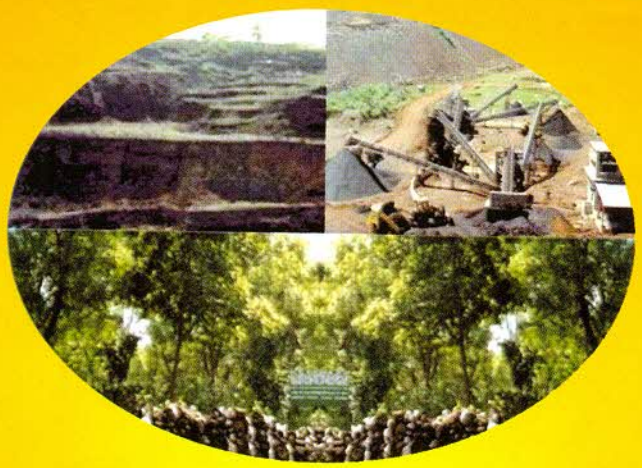

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

## CORPORATE OFFICE

*RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA*
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

## REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

## MINES DIVISION

**RUNGTA OFFICE**
MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

## SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
**RUNGTA OFFICE**
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
**RUNGTA OFFICE**
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

# समाज विकास

◆ मई २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ५ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.


## अनुक्रमणिका


| क्रमांक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| चिट्ठी आई है | ४ |
| **सम्पादकीय** : सत्यमेव जयते : आमिर खान के नाम एक पत्र – ***सीताराम शर्मा*** | ५-६ |
| **अध्यक्षीय** : म्हारो लक्ष्य राष्ट्र की प्रगति – ***हरि प्रसाद कानोड़िया*** | ७ |
| नारीशक्ति समाज व राष्ट्र की संरक्षिका – ***संतोष सराफ*** | ९ |
| विवाह समारोहों में कॉकटेल पार्टियां क्यों – ***संजय हरलालका*** | ११ |
| स्थायी समिति की बैठक : समाज सुधार एवं संगठन पर सार्थक चर्चा | १३-१४ |
| सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील | १४ |
| भवन निर्माण उप-समिति बैठक : सम्मेलन भवन का प्रारूप तैयार | १५ |
| सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत | १६-१७ |
| मारवाड़ी युवा मंच की हावड़ा शाखा द्वारा कृत्रिम अंग व उपकरण वितरण | १९ |
| अग्रसेन पर आधारित ड्रामा फिल्म | २१ |
| कलकत्ता शाखा : रक्तदान | २१ |
| **प्रान्तीय समाचार** – उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन / जूनागढ़ शाखा | २२ |
| **प्रान्तीय समाचार** – छत्तीसगढ़ प्रांत | २३ |
| संसद को शुद्ध सांसें मिले – ***ललित गर्ग*** | २४ |
| यादाँ में झुन्झुणूँ – ***अम्बु शर्मा*** | २५ |
| भ्रष्टाचार पर न्यायपालिका सख्त : कफन में जेब नहीं होती – ***सुरेंद्र किशोर*** | २६-२७ |
| वैवाहिक आचार संहिता | २७ |
| उच्च शिक्षा कोष : आवेदन पत्र आमंत्रित | २८ |
| टूटते परिवार, बिखरते सपने – ***भँवर लाल गट्टानी*** | २९-३० |
| SMS की दुनिया | ३० |
| **राजस्थानी कहानी / कविता** – ***नथमल केडिया*** | ३१-३२ |
| देश में एक नए जनोन्मुखी राजनीतिक विकल्प की जरूरत | ३३ |
| **सीडी समीक्षा** – समाज गौरव गान | ३४ |
| स्वागत थारो आज, पधारो म्हारा पावणा – ***श्रीमती माला सिंघल*** | ३४ |
| हंसगुल्ले | ३४ |



**स्वत्वावधिकारी**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

**प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा**



प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

## चिट्ठी आई है

### विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता "समाज विकास"

'समाज विकास' पत्रिका का अप्रैल अंक प्राप्त हुआ। सीताराम शर्मा द्वारा संपादकीय विचार "धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य" मंथन बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं सामाजिक है। सभी कांच के घर में पत्थरों से डरकर बैठे है। धन की महत्ता एवं बढ़ते प्रभाव ने सभी नीतियॉ सिद्धान्तों एवं मूल्यों को बौना कर दिया है। विवाह जैसी पवित्र, शाश्वत एवं वैदिक परंपरा की महत्ता पर प्रश्न चिह्न लगाना इसी अप-संस्कृति का परिचायक है। सामाजिक चितंन एवं उसका मंथन समय समय पर "समाज विकास" पत्रिका द्वारा देश के हर कोने में भेजा जाता है, यह बड़े ही सकून की बात है।

**– सत्यनारायण तुलस्यान**
मुजफ्फरपुर (बिहार)

### नैतिक मूल्यों का आह्वान

'समाज विकास' का अप्रैल २०१२ अंक मिला। समय की धड़कन को शब्दों में बयां करता यह अंक संस्कृति एवं संस्कारों की बात करता है। फिजूलखर्ची और दिखावे पर चोट करता है, गिरते नैतिक मूल्यों के प्रति सावचेन करता है और धार्मिक अंधविश्वासों से मुक्ति का आह्वान करता है। समाज सुधार में युवा एवं महिलाओं की भूमिका पर सम्मेलन आयोजित कर चिंतन करता हैं। विभिन्न प्रान्तों में हो रही सामाजिक गतिविधियों से अवगत कराता है।

इसके अतिरिक्त साहित्य की सुरभी से समाज को सुवासित करता है यह अंक। हरिप्रसाद कानोड़िया की एकांकी 'संस्कार' सेठ, सेठानी एवं समधी के संवाद के माध्यम से संस्कारों का संदेश देता है वहीं प्रख्यात साहित्यकार नथमल केड़िया की राजस्थानी कहानी 'सुख आपणै आस पास' में संत फ्रांसिस के माध्यम से मन को मोहने वाली शांति का अवलोकन करवाता हैं। केड़िया जी संदेश देते हैं कि सोच सकारात्मक हो तो सुख-शांति आस पास बिखरी पड़ी हैं किन्तु यह दर्शक की दृष्टि पर निर्भर है कि वह इसे किस तरह ग्रहण करता है। केडिया जी की 'कविता की तलाश' में कविता न रची जा सकती है, न तलाशने से मिलती है, उसे तो जीया जाता है। पंडित रमेश मोरोलिया की राजस्थानी कविता "भ्रष्टाचारी मुद्दौ", सामाजिक यथार्थ पर तीखा व्यंग्य है। श्री लक्ष्मी निवास शर्मा की कृति "आत्म मंथन" की समीक्षा अच्छी लगी।

समाज सुधार की यह मुहिम जारी रखें।

**– शिशुपाल सिंह नारसरा**
फतेहपुर (सीकर), राजस्थान

### प्रभावशाली सम्पादकीय

'समाज विकास' के अप्रैल २०१२ के अंक में प्रकाशित आपके प्रभावशाली सम्पादकीय में जिन सामाजिक मुद्दों की ओर इंगित किया गया है उसके लिए निःसंदेह आप साधुवाद के पात्र है तथा आशा करता हूँ कि आपकी संस्था व अन्य संस्थाओं ने भी इन मुद्दो को आगे बढ़ाया होगा।

**– काशी प्रसाद खेरिया**
५, नेशनल लाइब्रेरी एवेन्यू, कोलकाता - ७०००२७

### "धन का बढ़ता महत्व"

'समाज विकास' का अप्रैल २०१२ का अंक भाई श्री आत्माराम जी सोंथालिया के द्वारा मिला। पत्रिका काफी अच्छी लगी।

आपकी लिखी सम्पादकीय "धन का बढ़ता महत्व : गिरते नैतिक मूल्य" पसंद आई। विशेषकर आपकी लिखी हुई कुछ लाइने "एक वर्ग है, जिसे समाज की परवाह नहीं है" तथा "समाज ने धन के समझ आत्म समर्थन कर दिया है" तथा "समाज में सहीं को सही बोलने वाले प्रायः लुप्त हो गए हैं" काफी पसंद आई।

इस विषय में, इसी पत्र में भाई श्री संजय हरलालका का लेख "धार्मिक बनें, धर्म भीरू नहीं" काफी महत्वपूर्ण है। सही बातों को इन्होनें साहसपूर्ण ढंग से लिखा है। भाई श्री प्रह्लाद राय जी गोयनका बधाई के पात्र हैं जिनके सतप्रयास से कोलकाता के काली मंदिर में होने वाले शोषण से आम जनता को मुक्ति मिली। सैकड़ो करोड़ रूपया प्रतिवर्ष धार्मिक आयोजनों की बजाय अगर दीन दुखियों की सेवा तथा समाज कल्याण के कार्यो में लगाया जाय तो वह निश्चित रूप से नर तथा नारायण दोनों की ही प्रसन्न करेगा। अपने समाज के भाई श्री देवकुमार जी सर्राफ (आनंदलोक) इस दिशा में काफी प्रयासरत हैं। हरलालका जी का यह कथन "वह दिन दूर नहीं होगा जब धार्मिक आयोजनों में भी कॉकटेल पार्टियों का बोलबाला होगा" भविष्य की ओर ताकने पर मजबूर करता है। समाज को आज ऐसे ही प्रबुद्ध लेखकों की जरुरत है जो समाज में बढ़ती हुई कुरीतियों के खिलाफ खुल कर सही बातों को लिख सके।

भाई श्री ओमप्रकाश पोद्दार के द्वारा पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का यह कथन "बंगाल में रहने वाले मारवाड़ी भी बंगाल के हो गए हैं, मारवाड़ी किसी से भी कम नहीं हैं" काफी अच्छा लगा।

भाई श्री विश्वनाथ सिंघानिया के "वृद्धाश्रम" की बजाय "श्रद्धाश्रम" कथन काफी सुन्दर एवं विचारणीय है।

आपके निर्देशन में, इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मैं मंगल कामना करता हूँ।

**– श्याम सुन्दर खेमाणी**
आजीवन सदस्य, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोलकाता

सम्पादकीय

# "सत्यमेव जयते"

## आमिर खान के नाम एक पत्र

सीताराम शर्मा

प्रिय आमिर खान साहब,

हिन्दी फिल्म अभिनेताओं में से मैं स्वर्गीय बलराज साहनी साहब को ही बड़ी इज्जत एवं आदर की दृष्टि से देखता था। मुझे उनको कोलकाता आमंत्रित करने एवं प्रायः दो दिन तक साथ रहने एवं बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बलराज साहब एक प्रगतिशील, मानववादी एवं असाधारण समझ-बूझ के धनी व्यक्ति थे।

आमिर साहब, आप भी आम हिन्दी अभिनेताओं से बहुत कुछ अलग है यह मैं जानता था। कुछ वर्षों पहले आपका मेधा पाटकर के साथ नर्मदा बचाओ आन्दोलन से जुड़ने से लेकर हाल ही में अन्ना हजारे को आमरण-उपवास भंग करने के अनुरोध के साथ रामलीला मैदान पहुँचना, आपकी सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है। आपकी फिल्मों - मंगल पाण्डे, तारे जमीन पर, लगान, रंग दे बसन्ती - के साथ-साथ आपके विज्ञापन - अतिथि देवो भवः, सच्चो को चुने, अच्छो को चुने या "कूपोषण भारत छोड़ो" आपकी अमिट छाप छोड़ते हैं। सत्यमेव जयते ने मुझे एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथियों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। सत्यमेव एवं मारवाड़ी सम्मेलन के उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों को, जितना अभी तक देखा है, इतना नजदीक पाते हैं कि प्रायः पर्यायवाची है। मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं - समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। ७७ वर्षीय इस संस्था की स्थापना स्वतंत्रता के पूर्व १९३५ में हुई। यह संस्थापकों की दूदर्शिता थी कि उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक अभियान की जरूरत को सोचा एवं समझा।

मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने ५०-६० के दशक में पर्दा प्रथा का विरोध किया, घर घर जाकर घूंघट खींचे एवं लाठियां खाई। विधवा विवाह के समर्थन में आन्दोलन ही नहीं किये बल्कि विधवा विवाहों का आयोजन कराया। सम्मेलन के दो पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों ने स्वयं विधवा विवाह किया। दहेज दिखावा, आडम्बर एवं फिजूलखर्ची के विरूद्ध लगातार आवाज उठायी जाती रही है। लेकिन पूरी सफलता नहीं मिली है।

मारवाड़ी सम्मेलन अपने समाज की खूबियों के साथ-साथ खामियों एवं कमियों के विषय में खुलकर बातचीत करता

है। धन के बढ़ते प्रभाव, पारिवारिक टूटन, बढ़ते तलाक, गिरते नैतिक एवं सामाजिक मूल्य विषयों पर लेख एवं चर्चा, गोष्ठियों एवं सम्मेलनों के माध्यम से समाज को इन कुरीतियों से आगाह करना मारवाड़ी सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। देशभर में फैली राज्य एवं जिला स्तर शाखाओं एवं सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' हिन्दी मासिक के माध्यम से सम्मेलन समाज सुधार का कार्य करता है।

सत्यमेव के कार्यक्रम सम्मेलन के कार्यक्रम है। सम्मेलन एवं सत्यमेव का उद्देश्य एक ही है - सामाजिक कुरीतियों का विरोध एवं समाज सुधार। दहेज के दानव से, वैवाहिक आडम्बर एवं दिखावे से समाज पीड़ित है, वह इससे निकलना चाहता है, उसे सही राह चाहिये, उससे कहीं अधिक नेतृत्व चाहिये।

पिछले सात दशकों से मारवाड़ी सम्मेलन इन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध बैठक एवं आन्दोलनों के माध्यम से चेतना जागृत कर रहा है। सत्यमेव के अभी तक के दो एपीसोडो ने लोगों में एक अभूतपूर्व जागृति एवं समर्थन का भाव पैदा किया है। यूं लगता है जैसे समाज इस अज़ान की प्रतीक्षा कर रहा था। हमारे जैसी संस्थाएँ तो आपके प्रयास से अभिभूत एवं प्रेरित हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में हमारी युवा-संस्था मारवाड़ी युवा मंच वर्षों से अपनी हजारों शाखाओं के माध्यम से एक बहुत ही ईमानदार एक सार्थक अभियान चला रही है - सत्यमेव के कन्या भ्रूण-हत्या पर कार्यक्रम ने विस्फोटक प्रभाव डाला है एवं बहुत सी भ्रांतियों एवं धारणाओं को नेस्तनाबूद करने के साथ-साथ एक नंगा सच देश के सामने रखा है। हमारी महिला सम्मेलन ने इस ओर सामूहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलन के देश-व्यापी स्तर पर कार्यक्रम लिये हैं।

सत्यमेव की सफलता में हम आपकी-हमारी, सारे देश की सफलता देख रहे है। पर्दा प्रथा, तथा बालिका शिक्षा के अतिरिक्त अन्य सामाजिक कुरीतियों पर सम्मेलन को अभी तक बहुत कुछ सफलता नहीं मिली है। हम पर आरोप लगते हैं - मारवाड़ी सम्मेलन के नारे एवं गोष्ठियों के बावजूद दहेज-दिखावा, आडम्बर बढ़ रहा है। मिलनी के चार रुपये के हमारे नारे के बावजूद अब मिलनी के हजारों रुपये हो गये हैं। हमने वैवाहिक आचार संहिता के अन्तर्गत कई नियम तय किये हैं लेकिन उन्हें लागू करना कठिन है - क्योंकि समाज का भय नहीं है। भय बिन होय न प्रीत के विपरीत सम्मेलन का समाज सुधार का पथ केवल वैचारिक परिवर्तन एवं मन परिवर्तन का है तथा यह रास्ता सदैव

लम्बा एवं कठिन होता है।

इस आलोचना का सामना आमिर साहब आपके 'सत्यमेव जयते' को भी करना पड़ेगा, सच में यह आलोचना आरम्भ हो भी गयी है। "आमिर जादू की छड़ी घुमाना चाहते हैं", "आमिर सामाजिक मुद्दों को बेच रहे हैं", "आमिर का रंग दे बसन्तीनुमा इंसाफ नहीं चलता", कुछ तो व्यक्तिगत आक्षेप उठा रहे हैं आमिर प्रत्येक एपीसोड का ३ करोड़ रुपया ले रहे हैं, और क्या क्या?

समाज सुधार एक कठिन एवं लम्बी प्रक्रिया है। महात्मा गाँधी ने ठीक कहा था कि राजनैतिक क्रांति की बजाय सामाजिक क्रांति कहीं अधिक मुश्किल है। कोई नहीं कहता कि १३ एपीसोड के बाद देश में समाज-सुधार हो जायेगा लेकिन एक जागृति होगी - फिर सुबह होगी। ●

अध्यक्षीय

# "म्हारो लक्ष्य राष्ट्र की प्रगति"

**– हरि प्रसाद कानोड़िया**

राम राम!

पूर्वजो की दुरदर्शिता, संगठन की भावना, कार्यवत्त करने की क्षमता हमारे लिये प्रेणादायक है। उनकी देश भक्ति समाज सेवा, आदर्श हमारे लिये शक्तिप्रदायक है। ७६ वर्ष पहले सन् १९३५ में सम्मेलन को स्थापना हुई। उस समय ब्रिटिश सरकार द्वारा एक ह्वाइट पेपर प्रकाशित किया गया था। उस पेपर में यह लिखा था कि जो देसी राज्यों की प्रजा है, उसे ब्रिटिश राज्य की प्रजा के अधिकार नहीं दिये जायेंगे। इस बिल के आते ही तत्कालीन पूरे मारवाड़ी समाज में खलबली मच गई। क्योंक मारवाड़ी समाज उस समय राजपुताना की विभिन्न देसी रियासतों का हिस्सा माना जाता था। सिर्फ पूरे देश मे एक मात्र राजपुताना क्षेत्र ही था, जहां देशी राज्य कायम था। इस बिल से प्रवासी मारवाड़ी समाज में सीधें तौर पर प्रभावित होने की सम्भावना बन गई। यदि मारवाड़ी समाज को देशी राज्यों का नागरिक करार कर दिया जाएगा तो उसका अन्य भागों में नागरिकता का अधिकार समाप्त हो जाएगा। मारवाड़ी समाज अपने को असुरक्षित समझने लगा, उसी समय हमारे समाज के कुछ शुभचिंतको ने जैसे स्व० ईश्वर प्रसाद जालान, स्व० काली प्रसाद खेतान, स्व० बद्रीदास गोयनका, स्व० घनश्यामदास बिड़ला, स्व० देवी प्रसाद खेतान आदि ने इस बिल को गंभीरतापूर्वक लिया और बिल को संशोधित करने के लिये और देश के समस्त मारवाड़ियों को एक जगह संगठित करने के लिए सन् १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का गठन किया।

देश की स्वतंत्रा के लिये मारवाड़ियों ने तन मन धन से हिस्सा लिया। कितनी ही यातनायें सही फिर भी निडर रहे। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार एक अवसरनीय व्यक्ति थे। इंग्लिस कम्पनी में काम करते थे। अस्त्रों की पूरी जहाज विप्लव को सौंप दी। जेल गये, यातनाए भी सही। फिर भी हार नहीं मानी। दादा-दादी की आवाज उनके कानों मे गूंज रही थी – 'मन के हारे हार'। उन्हेंने गीता–प्रेस की स्थापना की और संसार को ज्ञान देने मे लग गये। ज्ञान दान सबसे बड़ा धर्म है। उस समय यातायात की सुविधा नहीं थी। आज की तरह संचार के साधन भी नहीं थे। सेठ चोखानी, सेठ जमुनालाल बजाज व अन्य समाज के व्यक्तियों के सहयोग से समाज का संगठन किया। कार्यकर्ताओं के सहयोग से समाज की कई कुरीतियों को हटाने में मदद मिली। बालविवाह, पर्दाप्रथा, और भी कोई बुरी प्रथा का खत्म हुआ। बालिकाओं को भी शिक्षा प्राप्त होने लगी। दहेज के प्रति भी जागरूकता हुई। आज दहेज का आवरण अनेक रूपों में आ गया है। शादी-विवाह में फिजूलखर्ची एवं आडम्बर आदि समाज की आत्मा को झंकारती है। सभी एक दूसरे पर अंगुली उठाते है। परन्तु समाज का कोई भी शेर आगे बढ़ कर अपने घर से रोक नहीं लगाता। एक कहावत है कि दान अपने घर से शुरू होता है। कहावत है पहले स्वयं पर नियंत्रन करें फिर समाज में पहल करें। हमें जोर-जबरदस्ती करके नहीं, लोगों के अंदर चेतना जगा कर इसे नियंत्रित करना है। हमें अपने संगठन को मजबूत करना है। हमें दुःख है, कि हमारे देश मे पांच करोड़ से अधिक परिवार मारवाड़ी समाज के है। परन्तु सदस्य नगण्य है। संगठन के माध्यम से ही हम देश में आवाज उठा सकते है। राजनीति में भी आगे बढ़ सकते है। राजनीति में हम अपने समाज के लोगों को भेज सकते है। सभी व्यक्ति अधिक से अधिक सदस्य बनाये जिससे हमारा संगठन मजबूत होगा।

कहते है कि सागर का मन्थन करने से अमृत और माता लक्ष्मी प्रकट हुई। उसी प्रकार युवा अपनी शक्ति का स्वयं मन्थन करें। अपने गुणों को धारण करें और अवगुणों कों दूर करें। बाबा भोले, श्री राम और श्री कृष्ण को अपना आदर्श बनाए।

नारी शक्ति को भी हमें पहचानना है। हम उच्च शिक्षा देने लगे है। लड़के और लड़कियों में समानता रखनी है। लड़कियां आपने भाग्य से आती है। ईश्वर कर्मप्रधान करके, सेवा और प्रेम की आदर्श स्थापना करने के लिये उन्हें भेजता है। सम्मेलन ने उनकी शक्ति को जागृत करने अपना संगठन बनाने की स्वतंत्रता दी है। दोनों संगठन एक दूसरे की शक्ति को समझते हुए सम्मेलन के कार्य को आगे बढ़ाये। फिजुल खर्च, आडम्बर और दहेज को नारी शक्ति ही रोक सकती है। वे इसमें सादगी ला सकती है। माता, लक्ष्मी का रूप लेकर धन को सही दिशा देने में सक्षम होती है।

शिक्षा अति आवश्यक है। पूर्व में ब्राह्मण शस्त्र, अस्त्र विद्या में निपुण हुआ करते थे। विद्यार्थियों को सादगी जीवन की पूर्ण रूप से शिक्षा देते थे। उच्च शिक्षा भी आवश्यक है। आज के समय में अर्थ के अभाव मे उच्च शिक्षा नहीं मिल पाती है। यह सभी व्यक्ति और समाज के लिये विचारणीय है। सम्मेलन ने इस उदेश्य से एक उच्च शिक्षा कोष की स्थापना की है। आप भी इस योग में सहयोग दे। ●

# IISD

*A Gateway to Careers*

SREI Foundation

*"Educate Morally & Technically"*
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

| | |
|---|---|
| 3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000 | 2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000 |
| 3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000 | 2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000 |

**ELIGIBILITY & SELECTION**

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

***Assistance for placement***

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

**Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :**

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

**Other Courses :**

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- **Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi**
- **NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview**
- **Certificate Course in Computer Applications**
- **Advanced Diploma in Financial Management**
- **Entrepreneurship Development**
- **Vocational & Technical Training**
- **Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)**
- **WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)**
- **Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)**
- **Diploma in Banking and Finance**
- **Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I**

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

## INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

**Unit - I**

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

**Unit - II**

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

# नारीशक्ति समाज व राष्ट्र की संरक्षिका

– **सन्तोष सराफ,** राष्ट्रीय महामंत्री

किसी भी देश या समाज की सभ्यता-संस्कृति व भौतिक ऐश्वर्य का मापदण्ड वहां की नारी की स्थिति के मद्देनजर रखकर ही किया जाता है। नारी मानव समाज की, मानव वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण व आवश्यक अंग है। मेरा मानना यह है की नारी नहीं होती तो मानवता नहीं होती। एक ही नारी विविध आयामों में होती है – कई चरित्र निर्वाह करती है। वह जन्म देती है, ममता देती है, सेवा करती है, धर्म पत्नी बनती है। इसलिए वह जननी, मां, सेविका, गुरु,पत्नी, रंभा आदि-आदि कई विविध सम्बोधनों से जानी जाती है।

कल्पना करे उस सुदूर अतीत काल का जब युवतियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। परन्तु आज की शिक्षित नारी प्रगति की होड़ में पुरुष समाज से पीछे नहीं है। आज समाज की नारी जाति शिक्षा जगत में काफी अग्रसर है। लेकिन दुःख है कि नारी जाति भी शिक्षा को व्यापारिक दृष्टिकोण से देखती है। अधिकतर युवतियों का रूझान एम. बी. ए., सी. ए., व डाक्टरी पेशे की तरफ है। मेरा यह मानना है कि युवतियों को बी. एड. की तरफ भी रुख करना चाहिए। बी. एड. करने से लाभ यह होता है कि रोजगार परक कोर्स होने के कारण शिक्षण संस्थानों में नौकरी मिलने के साथ समाज में आदर-सम्मान भी मिलता है।

*आज जिस तरह हमारे राष्ट्र का, समाज का, परिवार का सामाजिक परिवेश दूषित हो रहा है, पारिवारिक मूल्य टूट रहे है, परिवार का विघटन हो रहा है, इसे बचाने का काम हमारी महिला शक्ति ही कर सकती है।*

शिक्षा हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। विद्यार्थी का मेघा एवं चरित्र निर्माण का काम शिक्षक-शिक्षिकागण ही करते हैं। कहने का मूल आशय यह है कि आज की शिक्षा व्यवस्था पूर्णतः अर्थ उपार्जन पर केन्द्रीत हो गयी है अतः जब पढ़ लिख कर रुपया कमाना ही शिक्षा प्राप्त करने का मकसद रह गया है वैसी सूरत में क्यों नहीं बी. एड. शिक्षा प्राप्त करने की ओर रुख करें जिससे रोजगार भी मिले और सम्मान भी। समाज को ज्ञानात्मक परिवेश प्रदान करने का काम शिक्षिका बखूबी कर सकती हैं। कहा भी गया है ज्ञान दान महादान है।

हमारे राष्ट्र में नारी समाज की अग्रणी भूमिका रही है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में नारियों को अति विशिष्ट स्थान प्राप्त रहा है। मेरा यह स्पष्ट मत है कि नारी को सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं होने पर किसी भी राष्ट्र व समाज का पतन सुनिश्चित है। भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति स्वरूपा मानी गयी है। बिना पार्वती के शिव शोभायमान नहीं लगते। श्याम की शोभा राधा है, राम की शोभा सीता है। ये दृष्टान्त इसलिए दे रहा हूँ कि भारतीय सभ्यता में पुरुष नारी के बिना अधूरा है। गार्गी, मैत्रेयी सरीखी प्राचीन काल की कई विदूषी महिलाओं ने उच्च ज्ञान प्राप्त कर सम्मानित स्थान की प्राप्त की थी।

आज जिस तरह हमारे राष्ट्र का, समाज का, परिवार का सामाजिक परिवेश दूषित हो रहा है, पारिवारिक मूल्य टूट रहे है, परिवार का विघटन हो रहा है, इसे बचाने का काम हमारी महिला शक्ति ही कर सकती है। महिलाओं की यह महती जिम्मेवारी है कि परिवार के भरण-पोषण हेतु जिस भी क्षेत्र में काम करती है उसे करते हुए राष्ट्रीय जीवन, सामाजिक जीवन तथा पारिवारिक जीवन के निर्माण में भी सोचें जिससे सबल राष्ट्र, मजबूत समाज और भरा-पूरा परिवार का निर्माण हो सके। प्राच्य तथा पाश्चात्य समाज में एक प्रमुख अंतर यह है कि वहां परिवार नहीं है किंतु हमारे यहां परिवार है। परिवार नहीं होने से पाश्चात्य समाज पीड़ा भोग रहा है प्राच्य समाज में परिवार होने से आनन्द है। प्राच्य नारी शक्ति को सम्मान की दृष्टि से देखता है वहीं पाश्चात्य भोग की दृष्टि से।

इतिहास गवाह है कि हमारे देश में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, सुनैना, लक्ष्मीबाई, मीराबाई सरीखी विदुषी वीरांगना महिलाएं हुई है। आज भी उनके नाम और कृत्य अमर है। नारी शक्ति जीवन यापन हेतु अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन, संस्कृति, टूटते परिवार, पारिवारिक मूल्य को बचाने की पहल करें। ●

Comprehensive and Exclusive

# Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

# Subscribe

100% Bargain

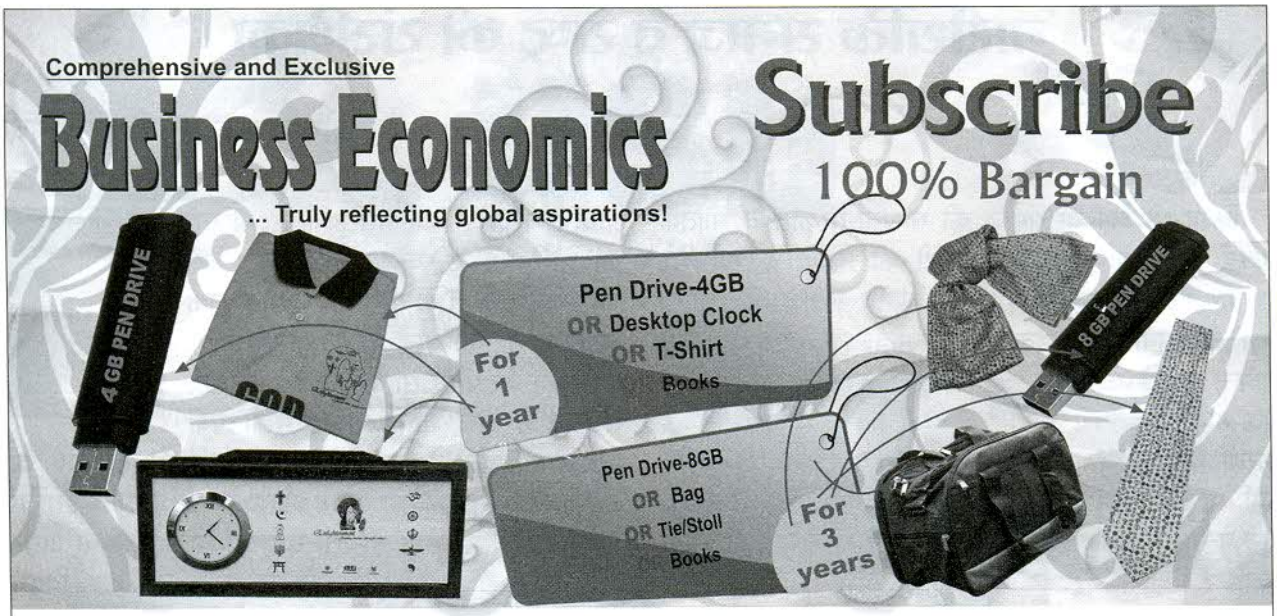


**Subscribe Business Economics :**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

| Tick | Term | No. of Issues | Price you pay | Gift Value | Saving | US $ | UK £ | Gift Option |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☐ | 3 Years | 72 | 1440/- | 1440/- | 1440/- | 216 | 144 | ☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books |
| ☐ | 1 Year | 24 | 480/- | 480/- | 480/- | 72 | 48 | ☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books |
| ☐ | 1 Year | 24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150) | 240/- | 150/- | 390/- | - | - | ☐ Exclusively for Students/Institutions |
| ☐ | 1 Year | 24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150) | 240/- | 150/- | 390/- | - | - | ☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS |

**For 1 year Book of choice upto ₹ 480** | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

## Business Economics — Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

**Mail this subscription form along with your Cheque / DD to :** Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

**For Subscription enquiries contact : Kolkata** : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
**New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

**Lucky DRAW**

**QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :**
**1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-**

# विवाह समारोहों में कॉकटेल पार्टियां क्यों?

– **संजय हरलालका**, *संयुक्त मंत्री*

'समाज विकास' के गत अंक में मेरे लेख 'धार्मिक बनें, धर्मभीरु नहीं' पर कई प्रतिक्रियाएं मुझे फोन, एसएमएस एवं मेल के माध्यम से मिली। एक व्यक्ति ने लेख की अंतिम पंक्तियों पर चुटकी भी ली जिसमें मैंने लिखा था कि 'अगर हमनें नई पीढ़ी को आडम्बर व दिखावा परोसा तो वह दिन दूर नहीं होगा जब धार्मिक आयोजनों में भी कॉकटेल पार्टियों का बोलबाला होगा।' कुछ लोगों का कहना है कि क्या ऐसा हो सकता है? लेकिन आजकल विवाह समारोह में जो कुछ हो रहा है क्या उसकी कल्पना किसी ने की थी? क्या किसी ने सोचा था कि विवाह समारोह जैसे पवित्र रश्मों की अदायगी पर शराब परोसी जायेगी? विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर कॉकटेल पार्टियों का आयोजन होगा? शायद नहीं।

विवाह समारोह में दिखावा-आडम्बर आदि बातें तो अब पुरानी हो गई है। उनके आगे जन्म लेने वाली नई समस्याओं से अब समाज को रूबरू होना है। धन के बढ़ते प्रभाव से नव धनाढ्य बन रहे समाज के तथाकथित धार्मिक प्रवृत्ति के लोग भी अब इसकी चपेट में आने लगे हैं। समाज में एक दौर था जब पिता अपने पुत्र के सामने बैठकर बात करने में भी हिचकिचाता था किसी डर की वजह से नहीं, बल्कि सम्मान की वजह से। उसके उलटे, आज हम देख रहे हैं कि पिता अपने पुत्र के साथ बैठकर शराब पी रहा हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? तो क्या धनवान होना हमारे समाज के लिए अभिशाप साबित हो रहा है?

गत दिनों सम्मेलन की समाज सुधार की बैठक में श्री प्रह्लादराय गोयनका ने वैवाहिक समारोह में हो रही कॉकटेल पार्टियों के सम्बन्ध में एक बात बहुत ही सटीक कही थी कि **'विवाह समारोह जैसे शुभ अवसर पर जहां हम अपने पितरों एवं देवताओं का स्मरण करते हैं, वहाँ कॉकटेल पार्टी कर क्या हम उनका अपमान नहीं कर रहे हैं?'** सचमुच में उनकी यह बात अत्यन्त धार्मिक, मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी है। ऐसी पार्टियों से युवा नव दम्पति का दाम्पत्य जीवन कितना सुरक्षित रह पाता है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जहाँ हमारे समाज में तलाक की बात सोचना ही गुनाह समझा जाता था वहीं आज तलाक एक मजाक बन कर रह गया है। थोड़ा सा मनमुटाव हुआ नहीं कि तलाक की नौबत आ जाती है।

एक तरफ तो हम प्रतिवर्ष अपने-अपने कुल देवताओं को धोक लगाने, सवामणी चढ़ाने हेतु प्रति वर्ष राजस्थान जाते हैं और दूसरी ओर उन्हीं देवताओं की उपस्थिति में होने वाले मांगलिक आयोजनों में अधार्मिक कृत्य करते हैं? लेकिन हमें यह समझना होगा कि 'भगवान की लाठी' की आवाज नहीं होती। धनवान होने के बावजूद संतान का संस्कारी न होना इसी लाठी की मार होती है।

आपको बता दूँ कि न तो मैं बहुत बड़ा लेखक हूँ, और न ही समाज सुधारक। एक अखबारनवीस होने एवं समाज में भागीदारी के कारण आये दिन घट रही घटनाओं एवं दुष्परिणामों से दो-चार होना पड़ता है जिसके आधार पर प्राप्त ज्ञान के अर्जन को एक कलमकार के रूप आपके समक्ष रख रहा हूँ। प्रयास करने से एक न एक दिन सफलता मिलना अवश्यंभावी है। राणा साहब के विरोध के बावजूद मीरा बाई ने अपनी भक्ति नहीं छोड़ी, भक्त प्रहलाद ने अपने ही पिता का विरोध सिर्फ इसलिये किया कि वे स्वयं को ईश्वर मानते थे। इसके लिए प्रह्लाद को नाना प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, लेकिन वह अपने पथ पर अडिग रहा। जिसका परिणाम हम सभी जानते हैं। जीत हरदम सत्य की ही हुई। थोड़े से कष्टों से घबड़ाकर अगर हम हार मान जायेंगे तो हार निश्चित है। जीतना है तो सबसे पहले लड़ना होगा स्वयं से। जिस दिन हम स्वयं से लड़ना सीख जायेंगे, सफलता हमारे कदम चूमेगी। ●

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

# समाज विकास

## पढ़ें और पढ़ायें

## पूरे भारतवर्ष में प्रसारित समाज विकास में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

### विज्ञापन दरें

**TARIFF**

| | |
|---|---|
| Cover Page / Colour | Rs. 50,000.00 |
| Inside Covers / Colour | Rs. 25,000.00 |
| Special Full Page / Colour | Rs. 15,000.00 |
| Full Page | Rs. 10,000.00 |
| Half Page | Rs. 5000.00 |

**MECHANICAL DATA**

| | |
|---|---|
| Overall Page Area | 27 x 19 cm |
| Print Area | 22x16 cm |
| No. of Coloum | Two |

All Cheques to **"All India Marwari Federation"**

सम्पर्क करें -

**अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन**

१५२ बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता - ७०० ००७

फोन एवं फैक्स ०३३-२२६८-०३१९

ईमेल - aimf1935@gmail.com

# स्थायी समिति की बैठक

# समाज सुधार एवं संगठन पर सार्थक चर्चा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक १२/५/२०१२ को वंडर इमेज के कार्यालय में संपन्न हुई। सभा की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** ने की।

इस अवसर पर श्री पोद्दार ने कहा कि हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक हुई। उस बैठक में एकल सदस्यता, केन्द्र और प्रांत का एक संविधान, केन्द्रीय और प्रांतीय शाखा का एक नामकरण के प्रस्ताव पारित हुए। सम्मेलन भवन निर्माण के बारे में उन्होंने कहा कि निर्माण शुरू करवाने का काम अंतिम चरण में है। डायरेक्टरी के संदर्भ में श्री पोद्दार ने कहा कि हरिद्वार की बैठक में डायरेक्टरी का लोकार्पण किया गया था, सदस्यों को डायरेक्टरी डिस्पैच की जा रही है।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संतोष सराफ** ने महामंत्री की रिपोर्ट पढ़ी। उन्होंने कहा कि हरिद्वार बैठक में एकल सदस्यता हेतु पत्र सभी प्रांतीय शाखाओं को भेजे गए हैं। रिपोर्ट आने के बाद सभी प्रांतीय अध्यक्ष व मंत्री की बैठक बुलाने की योजना है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री आत्माराम सोंथलिया** ने आय-व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। वर्तमान सदस्य संख्या को असंतोषजनक करार देते हुए उन्होंने सदस्यों से सदस्यता अभियान में सहयोग देने की अपील की।

**श्री ओम लडिया** ने कहा कि विवाह समारोह में फिजूलखर्ची, दिखावा समाज के ऊपरी तबके से निचले तबके की ओर आती है अतः समाज का ऊपरी तबका ऐसी बुराईयों को छोड़ेंगे तो निचला तबका भी उनका अनुकरण करेगा। सम्मेलन से समाज सुधार का संदेश समाज तक कैसे पहुंचे यह विचारणीय प्रश्न है।

**श्री नन्द किशोर अग्रवाल** ने कहा कि कोलकाता में समाज की जो सभा संस्था है उसके माध्यम से सम्मेलन के समाज सुधार विषयक कार्यक्रम को समाज तक पहुंचाया जा सकता है।

**बाएं से दाएं – श्री संजय हरलालका, श्री संतोष सराफ, श्री राम अवतार पोद्दार, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री प्रवीण कुमार बैद, श्री सीताराम शर्मा, श्री राजेश पोद्दार, श्री विश्वनाथ सराफ, श्री जयगोविंद इंदौरिया एवं श्री राम निवास चोटिया**

**श्री जय गोविन्द इन्दौरिया** ने कहा कि विवाह अनुष्ठान के लिये कोलकाता में साधारण जगह नहीं होने से समाज के गरीब तबके को दिक्कत होती है।

**श्री नन्दलाल सिंघानिया** ने कहा कि समाज के ९०% परिवार में शादी समारोह के अवसर पर मद्यपान का प्रचलन हो चुका है। कोलकाता के बाहर अन्य शहरों में भी शादी-

विवाह के मौके पर मद्यपान का प्रचलन हो रहा है। लेकिन यह गलत है, इस पर अंकुश जरुरी है।

**श्री प्रवीण गोयनका** ने कहा कि समाज सुधार की दिशा में जागरूकता लाने के लिए जो गोष्ठियां हो रही है उसकी विडियोग्राफी एवं सीडी बनवाकर समाज से अपील कर सकते हैं।

**श्री जुगल किशोर जैथलिया** ने फिजूलखर्ची रुकवाने के लिए प्रचारात्मक माध्यम जैसे भागवत कथा आदि माध्यमों की जरुरत पर बल दिया।

**श्री विश्वनाथ सिंघानिया** ने कहा कि कोलकाता में राजस्थान एवं हरियाणा के प्रवासी लोगों की जो भी संस्थाएं हैं उसके अध्यक्ष तथा मंत्री को सम्मेलन से जोड़ें।

**श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि – हरिद्वार की बैठक सफल रही। कई प्रांतों के अध्यक्ष व मंत्रियों ने वहां की बैठक में शिरकत करते हुए आवश्यक सुझाव दिए। कई प्रस्ताव भी पारित किये गए। हमारा वर्तमान समाज कई तरह की सामाजिक बुराइयों के चंगुल मे फंसा हुआ है। समाज सुधार के लिए एक सूत्री कार्यक्रम तय किया जाना सटीक रहेगा। एक साथ बहुत सारे कार्यक्रम शुरू करने पर संतोष जनक परिणाम नहीं मिलेंगें। मद्यपान का बढ़ता प्रचलन समाज के लिए घातक है। मद्यपान जैसे विषय पर समाज का समर्थन हासिल किया जा सकता है। हमलोग सुधार के आंदोलनात्मक कार्यक्रम शुरु करें। यह प्रण कर लें कि जिस शादी समारोह में मद्यपान का सेवन किया जाएगा वैसे समारोह का बहिष्कार करेंगे। धर्म का समाज पर प्रभाव को देखते हुए किसी जानकार धार्मिक गुरू से वैवाहिक कार्यक्रम में मद्यपान नहीं करने का अपील पत्र तैयार करवाने की योजना है जिसे समाज विकास में भी प्रकाशित किया जाएगा।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संयुक्त महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने कहा कि आज की बैठक की सार्थकता सदस्यों की उपस्थिति से सिद्ध हो जा रही है। सम्मेलन से लोगों की अपेक्षाएं बढ़ रही है। मिलकर काम करने पर सफलता जरूर मिलेगी। इस बैठक में जो भी मापदंड तय हुए हैं उसे शुरु करवाना हमलोगों का दायित्व है। ●

## सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील

आपके सुपुत्र/सुपुत्री के मांगलिक विवाह के अवसर पर कृपया हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। कृपया वर-वधू को सुखी एवं दीर्घ वैवाहिक जीवन की हमारी शुभकामनाएं प्रेषित करने की कृपा करें।

हमारे पूर्वजों ने ९६ वर्ष पूर्व समाज के सर्वांगीण विकास एवं समाज सुधार के उद्देश्यों को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। सम्मेलन दहेज, दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, पर्दा प्रथा आदि रुढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सचेष्ट रहा है।

वैवाहिक समारोहों में बढ़ता आडम्बर, दिखावा एवं फिजूलखर्ची, महंगे वैवाहिक निमंत्रण पत्र एवं शुभ विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर कॉकटेल पार्टी (मद्यपान) का आयोजन आदि समाज के लिये गंभीर चिंता का विषय है। इन बढ़ती कुरीतियों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। इतर समाज में हमारी छवि खराब हो रही है।

यह आवश्यक है कि हम इन विषयों पर गंभीर चिंतन कर इन प्रवृतियों से परहेज बरतते हुए समाज की स्वस्थ छवि प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करें।

आपका सहयोग एवं समर्थन समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

आदर सहित –

आपका

| | | |
|---|---|---|
| **हरि प्रसाद कानोड़िया** | **जुगल किशोर सराफ** | **संतोष सराफ** |
| राष्ट्रीय अध्यक्ष | चेयरमैन | राष्ट्रीय महासचिव |
| | समाज सुधार समिति | |

# भवन निर्माण उप-समिति बैठक

# सम्मेलन भवन का प्रारूप तैयार

बाएं से दाएं – श्री संतोष सराफ, श्री नंद किशोर अग्रवाल, श्री सीताराम शर्मा, श्री राम अवतार पोद्दार, श्री द्वारिका प्रसाद डाबड़ीवाल एवं श्री नन्द लाल रुंगटा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की भवन निर्माण उपसमिति की बैठक उपसमिति चैयरमेन श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल की अध्यक्षता में गत शनिवार १९ मई को सम्पन्न हुई। बैठक में भवन के नक्शे के प्रारुप को अन्तिम रूप से तय किया गया एवं शीघ्र नक्शा कोलकाता कारपोरेशन में जमा करने का निर्णय लिया गया। उप समिति ने भवन के निर्माण एवं इसे सुसज्जित करने के लिये बजट तैयार कर आगामी बैठक में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया।

ज्ञात रहे कोलकाता के २५ए, अमहर्स्ट स्ट्रीट (राजा राम मोहन सरणी) में १० कट्ठा जमीन पर एक पांच तल्ला सम्मेलन भवन के निर्माण कार्य को हाथ मे लिया गया है। बैठक में पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा सम्मेलन पदाधिकारीगण श्री राम अवतार पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री सन्तोष सराफ, महामंत्री, एवं श्री नन्दकिशोर अग्रवाल (विशेष आमंत्रित) आदि उपस्थित थे। ●

## समाज विकास में वर-वधू परिचय

**आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।**

**इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७०००० ७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।**

# सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

**नाम : श्री दीपक अग्रवाल**
निवास : क्वू-९२, शिवालिक नगर
भेल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९३१९० ४०४३७

**नाम : श्री घेवाराम पुरोहित**
निवास : टी-१०१, शिवालिक नगर
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९३५९९ ३२७०८

**नाम : श्री सोनी कुमार शर्मा**
निवास : वार्ड नं ५,
रवीन्द्र निकेतन स्कूल के पास
सिलीगुड़ी - ७३४४०५
मोबाईल : ०९८३२० ९२४९४

**नाम : श्री हरेन्द्र कुमार गर्ग**
निवास : बी-२, कोहली निवास
गांधी आश्रम, विष्णु गार्डेन
कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मोबाईल : ०९८९७० ९०९९१

**नाम : श्री राज कुमार नाहटा**
कार्यालय : मयुर, सेठ श्रीलाल मार्केट
सिलीगुड़ी
मोबाईल : ०९४७४६ ८६८१५

**नाम : श्री गिरीश कुमार दुजारी**
निवास : १३०/१, कोलिन स्ट्रीट
कोलकाता ७०००१६
मोबाईल : ०९८३०४ ९१८६०

**नाम : श्री पवन दाधीच**
निवास : नारायणी निवास
एम जी रोड, खालपाड़ा
सिलीगुड़ी
फोन : ०९४३४० ७८९०९

**नाम : श्री केशव किशोर शर्मा**
निवास : १७, देश बंधु रोड (पश्चिम)
आलमबाजार
कोलकाता - ७०००३५
मोबाईल : ०९८३०४ ११३३०

**नाम : श्री महेन्द्र सिंघल**
निवास : दिल्ली फुटवीयर
सेठ श्रीलाल मार्केट,
सेवक रोड, सिलीगुड़ी
मोबाईल : ०९५४७३ ६०३७१

# सम्मेलन के नए विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

**नाम : श्री कैलाश शर्मा**
कार्यालय : श्री सालासर दरबार धाम
संतोषी नगर
सिलीगुड़ी
मोबाईल : ०९८३२० १३३१५

**नाम : श्री बाबुलाल बंका**
निवास : १०६, बांगुड़ एवेन्यू,
ब्लाक- 'सी'
कोलकाता - ७०००५५
मोबाईल : ०९८३०० २९५६७

**नाम : श्री गोपाल प्रसाद अग्रवाल**
कार्यालय : सिद्धि विनायक पिगमेंट
द्वारा टेलिट्रोनिक, होटल गेट वे के
सामने, सेवक रोड, सिलीगुड़ी
मोबाईल : ०९८३२० १७३००
९४३४० ८५१०५

**नाम : श्री कृष्ण कुमार सोंथालिया**
निवास : ७४, जी टी रोड (नार्थ)
सलकिया, हावड़ा - ७११११०६
मोबाईल : ०९८३१० ५१६५६

**नाम : श्री बिनोद कुमार तिवारी (पारीक)**
निवास : ए-४९, वसुन्धरा आवासन
सेटेलाइट टाउनशीप
फुलबाड़ी, जलपाईगुड़ी
मोबाईल : ०९४७४६ ८०५२१

**नाम : श्री उत्तम कुमार अग्रवाल**
कार्यालय/निवास : स्टाइल्सपा फर्निचर
राधाज्योति, एस एफ रोड
सिलीगुड़ी - ७३४००५
मोबाईल : ०९४३४० २००२०/
०९४३४१ ४३६९१

## आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

**– सीताराम शर्मा**
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं
सम्पादक, समाज विकास

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

## मारवाड़ी युवा मंच की हावड़ा शाखा द्वारा कृत्रिम अंग व उपकरण वितरण

# सेवा में जाति धर्म का कोई स्थान नहीं

'सेवा में जाति धर्म का कोई स्थान नहीं है। मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है और जहां आवश्यकता है वहां जाकर सेवा करना ही वास्तविक सेवा है।' यह उद्‌गार भागवत मर्मज्ञ पं० श्री मालीराम शास्त्री ने राजारहाट के पाथेरघाटा में स्थित 'ममता का मंदिर' में मारवाड़ी युवा मंच, हावड़ा शाखा की ओर से भागवत जन-कल्याण ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित निःशुल्क कृत्रिम अंग व उपकरण वितरण शिविर का उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने हावड़ा से आकर राजारहाट में इस तरह के शिविर का आयोजन करने के लिये मारवाड़ी युवा मंच, हावड़ा शाखा को साधुवाद देते हुए कहा कि वास्तव में इन्होंने सेवा का मर्म समझा है जो दूसरे ऐसे संगठनों के लिये भी अनुकरणीय है।

हावड़ा शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री विजय कानोड़िया की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पौद्दार, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, विशिष्ट उद्योगपति श्री सूर्यप्रकाश बागला, विशिष्ट समाजसेवी श्री बासुदेव धानुका, मुख्य वक्ता अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद शाह, पाथेरघाटा ग्राम पंचायत के प्रधान श्री अशोक नस्कर व पंचायत सदस्य श्री अली, श्री संतोष ढांढनिया, श्री सीताराम शर्मा, श्री कमलेश शर्मा, श्री सुनील अग्रवाल, श्री अनिल गुप्ता (दिल्ली) आदि ने इस कार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि युवा समाज का इस क्षेत्र में अग्रसर होना हर्ष का विषय है। इस अवसर पर मंच के भूतपूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्रवण अग्रवाल, उत्तर मध्य शाखा की अध्यक्षा श्रीमती अनुराधा खेतान, बड़ाबाजार शाखा अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, कोलकाता शाखा अध्यक्ष श्री अनुप अग्रवाल, श्री रविन्द्र केजरीवाल 'रवि' सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मंच के हावड़ा शाखा अध्यक्ष श्री सज्जन तायल ने बताया कि इस शिविर में कुल ७५ लोगों को कृत्रिम पैर, केलिपर, बैशाखी इत्यादि अंग व उपकरण प्रदान किये गए। सचिव श्री मनोज गोयल ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला एवं संयोजक श्री विष्णु पौद्दार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में भागवत जन-कल्याण ट्रस्ट के जगदीश अग्रवाल, उत्तम अग्रवाल व संजय गुप्ता और मंच के प्रदीप केडिया, राजेश पंसारी, मनमोहन गोयल, दीपक अग्रवाल, संदीप अग्रवाल, पंकज टिबड़ेवाल, संदीप पाटोदिया, संजय सिंघानिया, दिनेश विदावतका, रितेश अग्रवाल, राजकुमार बागला एवं महिला इकाई की प्रिया पौद्दार, रेणू तायल, सुनीता केडिया, ममता भुवालका ने सक्रिय सहयोग दिया। हावड़ा वेलफेयर ट्रस्ट ने आगंतुकों के लिये शीतल पेयजल का प्रबंध किया। ●

*With Best Compliments From :-*

# M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

**1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211**
**KOLKATA -700 069**

*Tele No. : 2210-3480, 2210-3485*
*Fax No. : 2231-9221*
*e-mail : roadcargo@vsnl.net*

**BRANCHES & ASSOCIATES AT**

*DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM*

## अग्रसेन पर आधारित ड्रामा फिल्म

# "एक ईंट एक रूपैया"

श्री अग्रसेन महाराज

पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन (जिला ईकाई झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन) द्वारा अग्रसेन पर आधारित एक ड्रामा फिल्म, "एक ईंट एक रूपैया" तैयार की गयी है जिसका सर्वभारतीय प्रदर्शन ७ जुलाई २०१२ को किया जायेगा।

फिल्म के सह निर्माताओं में श्री नन्दलाल रुंगटा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, श्री राधेश्याम अग्रवाल, सम्पादक, दैनिक उदितवानी, श्री चन्दुलाल भालोटिया एवं श्री दिलीप गोयल प्रमुख है।

लगभग ७० मिनट की अवधि की इस फिल्म की शुटिंग जमशेदपुर, दिल्ली, अग्रोह (हिसार, हरियाणा) में हुई है। फिल्म के पटकथा लेखक हरि मित्तल एवं निर्देशक संजय सिंह है।

नन्दलाल रूंगटा
निवर्त्तमान अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच की प्रांतीय, जिला एवं नगर शाखाएं उक्त फिल्म का आगामी ७ जुलाई को संध्या ७ बजे एक साथ प्रदर्शन करें, यह अपील श्रीमती लता अग्रवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला मंच, श्री निर्मल काबरा, जिला अध्यक्ष, पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन, श्री संदीप मुरारका, महासचिव पूर्वी सिंहभूम जिला मारवाड़ी सम्मेलन एवं श्री विनय अग्रवाल प्रांतीय सम्पादक झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच ने की है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ अपनी सभी प्रांतीय, एवं जिला स्तर की शाखाओं से निवेदन करते है कि इस कार्यक्रम हो सफल बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करे।

## कलकत्ता शाखा : रक्तदान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कलकत्ता शाखा ने लायंस क्लब जिला ३२२ बी वन के सहयोग से स्पेसटाउन हाउसिंग कम्पलेक्स में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जिसमें मोसाइन वैन के द्वारा कुल ३० लोगों ने स्वैच्छिक रक्तदान दिया। इस अवसर पर महिला सम्मेलन की अध्यक्ष रेणू अग्रवाल ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों की नितांत आवश्यकता है, साथ ही यह भी जरूरी है कि प्राप्त किया गया रक्त उन्हीं लोगों तक पहुंचे जिसे इसकी जरुरत है।

प्रान्तीय समाचार

## उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

# "सामाजिक परिवर्तन – एक चुनौती"

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, ओड़िशा, की तरफ से राउरकेला शाखा के आतिथ्य में महाराजा अग्रसेन भवन में "सामाजिक परिवर्तन - एक चुनौती" विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ ने की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए राउरकेला शाखाध्यक्ष श्री संतोष अग्रवाल ने कहा कि आज हमारा समाज परिवर्तन के चौराहे पर खड़ा है, न तो हम अतीत के संस्कारो एवं संयुक्त परिवार की परिपाटी को निभा पा रहे हैं और न ही आधुनिक युग के बदलते परिवेश को अपना पा रहे हैं। हमारा समाज शादी-ब्याह के उन नियमों एवं बन्धनों को भी भूलता जा रहा है, जो सादियों सें हमारी पहचान बने हुए थे। 'मारवाड़ी' शब्द केबल एक शब्द नहीं था, यह इतिहास के उन स्वर्ण अक्षरों में अंकित एक गर्व था, जिन्हें लोग लक्ष्मी पुत्र-व्यापारी-दानदाता एवं परोपकारी के रूप में ही जानते थे। देना एवं सेवा जिनका धर्म था, आज उन्हीं मारवाड़ियों की क्या स्थिति हो गई है? यह एक चुनौती है-हमारी पहचान के लिये। श्रीमती सुषमा शारड़ा ने कहा कि समस्या के निदान के साथ साथ अमल भी करना पड़ेगा। बच्चों में त्याग करने की आदत डालनी होगी।

युवा मंच के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रवीण गर्ग ने कहा कि कोई भी परिवर्तन की निज से शुरूआत होनी चाहिये। शादी के बाद बच्चे को स्पून फीडिंग बन्द करना चाहिये। मृत्यु भोजन पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिये।

श्री जगदीश चौधरी ने कहा कि हमारी पूंजी हमारी धरोहर (हमारे बच्चे) हमसे दूर होते जा रहे हैं। आपसी समन्वय का अभाव परिलक्षित हो रहा है। हम सांस्कृतिक नैतिक मूल्य से दूर होते जा रहे है। हमारे बच्चे बचपन से सिर्फ पैसा कमाने के बारे में ही सोचते हैं।

श्री रामवतार अग्रवाल ने कहा कि हमारे बच्चे अर्थ कमाने में सक्षम है। यह अच्छा है। जो नहीं कमाता है वह फालतू है। समाज में अर्थ का सदुपयोग होना चाहिये।

अन्त में विषय का समापन करते हुए श्री सुरेंद्र लाठ ने कहा कि पहले हमारी चुनौती थी पर्दा प्रथा की। परन्तु आज हमे सामाजिक समारोहों मे शरीर पर कपड़ो की कमी परिलक्षित हो रही है। अब शादी व्याह में तथा सामाजिक कार्यक्रमों में फिजुल खर्च बढ़ रहे है। अब हालात यह हो गए हैं कि संयुक्त परिवार के कोई भी लड़की देना नहीं चाहता। हम अर्थ प्रधान बनें किन्तु अर्थ हमारा अनर्थ नहीं करे ऐसी सोच का विचार होना चाहिये।

श्री सतीश अजमेरा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

## जूनागढ़ शाखा : प्रतिभा सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की जूनागढ़ शाखा, मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी महिला समिति एवं गायत्री परिवार ने जूनागढ़ अग्रसेन भवन में एक संयुक्त कार्यक्रम आयोजित कर आइ ए एस में उत्तीर्ण होने वाले काटाभांजी के मनीष अग्रवाल एवं केसिंगा के अनुपम साहा का स्वागत किया।

इस अवसर पर पूर्व नगरपाल मानिक चंद विएवाल, बजरंग खेमका, ललित अग्रवाल, निर्मल महंती, श्रीमती कांता बंसल आदि कई लोग मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन किया गोपाल मित्तल ने एवं धन्यवाद ज्ञापन दिया राजेश अग्रवाल ने।

प्रान्तीय समाचार

## छत्तीसगढ़ प्रांत

# जीवन जीने की कला : सेवा, सत्संग और साधना

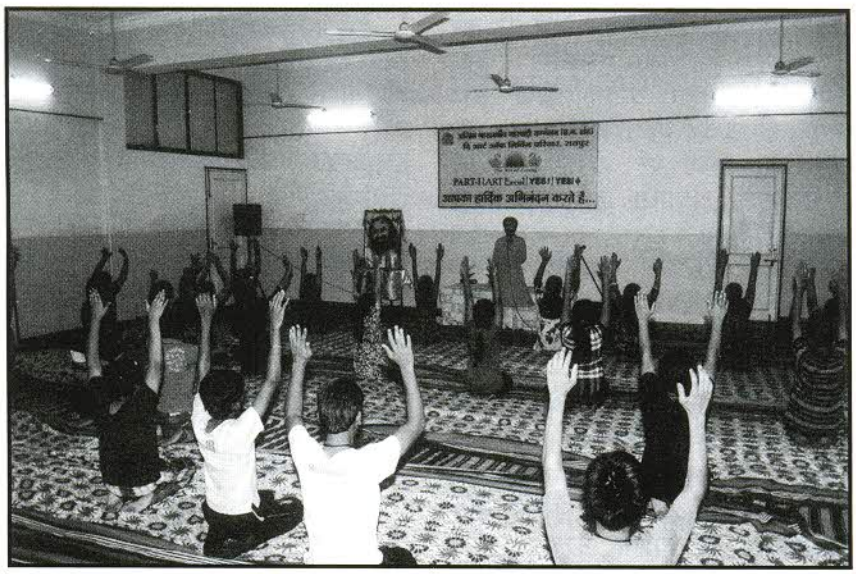

जीवन में सेवा, सत्संग एवं साधना को शामिल कर लिया जाए तो जीवन सरल हो जाता है, इन सब बातों को शामिल करते हुए आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षक अश्वनी जग्गी ने नॉलेज प्वाइंट के तहत बताया। मौका था अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन छत्तीसगढ़ प्रांत एवं आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षण शिविर के समापन का। रायपुर के समता कालोनी स्थित मित्तल भवन में १५ मई से प्रारंभ हुए इस छः दिवसीय बेसिक कोर्स के आकिरी दिन सुदर्शन क्रिया के अलावा जीवन के "की प्वाइंट्स" के साथ-साथ रोचक गेम्स व पहेलियों के माध्यम से जीवन जीने की कला की जानकारी दी गई। इसमे १८ से ७० वर्ष के उम्र के ५३ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इससे पहले १३ से १८ वर्ष के किशोरों को जीवन में सफलता, परेशानी से लड़ना, मानसिक व शारीरिक विकास, दोस्त बनाने की कला, आत्मविश्वास मजबूत करना, सेवा भावना जैसी विभिन्न जीवन की कठिनाइयों से लड़ने के उपाय बताए। उक्त शिविर में ४८ बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन छत्तीसगढ़ प्रांत के महामेत्री घनश्याम पोद्दार ने बताया कि आर्ट ऑफ लिविंक के बेसिक कोर्स में योगाभ्यास, श्वास प्रणाली, ध्यान व सुदर्शन क्रिया के ३० मिनट के नियमित अभ्यास से मानसिक, शारीरिक और आत्मिक बल मिलता है। छत्तीसगढ़ प्रांत के प्रदेश सहसचिव सत्येन्द्र अग्रवाल ने जानकारी दी कि मुख्यतः सांस प्रक्रिया पर आधारित सुदर्शन क्रिया इस बेसिक कोर्स का मुख्य अंग है। बैसिक कोर्स के अंतिम दिन प्रशिक्षक अश्वनी जग्गी ने बताया कि अगर इंसान किसी कार्य की जिम्मेदारी लेता है तो उसे गंभीरता के साथ पूरा करना चाहिए लेकिम आने वाली कठिनाईयों व समस्याओं के प्रति उसके मन में कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए अर्थात् जिम्मेदारी ले एवं शिकायत न करें। जीवन में सेवा, सत्संग एवं साधना पर प्रकाश डालते हुए उन्होने कहा कि सेवा से मन को शांति मिलती है जबकि सत्संग से स्वयं, परिवार एवं समाज का भला होता है। साधना के माध्यम से मन पर काबू पाया जा सकता है।

इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री घनश्याम पोद्दार एवं सहसचिव सत्येन्द्र अग्रवाल के अलावा कमल तिवारी, ऋषि अग्रवाल, श्रीमती शशि पोद्दार, श्रीमती निशा अग्रवाल, लक्ष्मी तिवारी, बृजेश शुक्ला, विक्रम अग्रवाल व विकास पल्सानिया सहित ऑर्ट आफ लिविंग परिवार के सदस्य शामिल थे।

## भारतीय संसद की ६०वीं वर्षगांठ के अवसर पर

# संसद को शुद्ध सांसें मिले

– ललित गर्ग

भारतीय संसद ने अपने जीवनकाल के साठ वर्ष पूरे कर लिए हैं। मूल्यवान ६० वर्ष नहीं है, बल्कि मूल्यवान वे क्षण है जिन क्षणों में संसद ने नया इतिहास बनाया। क्या संसद ने अपने अमूल्य 'क्षण' की कीमत को पहचाना है। संसद का मूल्यवान समय तो छोटी-छोटी बातों पर अभद्र शब्दों का व्यवहार, हो–हल्ला, छींटाकशी, हंगामा, बहिष्कार और बहिर्गमन जैसी घटनाओं में बीत जाता है। संसद को गौरवशाली बनाने के लिये सबसे बड़ी जरूरत है कि संसद के एक-एक क्षण को पहचाने और उसे कारगर, उपयोगी एवं कीमती बनाये। आदर्श एवं महान् वही होता है जो क्षण को पहचानता है, चाहे वह संस्था हो या व्यक्ति।

आज बड़े-बड़े राष्ट्रो के चिन्तन, दर्शन व शासन प्रणाली में परिवर्तन आ रहे हैं। सत्ता परिवर्तन हो रहे है। अब तक जिस विचारधारा पर चल रहे थे, उसे किनारे रखकर नया रास्ता खोज रहे हैं। इन स्थितियों में हमारी संसद और लोकतंत्र की प्रणाली अक्षुण्ण है यह विशेष गौरव की बात है। १३ जनवरी १९५२ को इसके पहले अधिवेशन की नींव पड़ी थी। नव-स्वतंत्र देशों में ६० वर्षों तक बिना किसी अवरोध के संसदीय लोकतंत्र का अनुसरण करने की मिसाल पूरी दुनिया में अकेले भारत की ही है।

साठवीं वर्षगांठ मनाते हुए संसद में एक ऐसे कार्टून पर बहस हुई, यह बहस और उससे जुड़ी राजनीति ने संसद की गरिमा और गौरव को धुंधला ही नहीं किया बल्कि संसद के आचरण और उसकी काबिलीयत पर भी प्रश्न जड़े हैं। एक ऐसा कार्टून, जो १९४९ में, यानी भारतीय संसद का पहला सत्र शुरू होने के करीब तीन साल पहले बना था। जिन दो लोगों को इस कार्टून में 'कांस्टिट्यूशन' (संविधान) नाम के घोंघे को हांकते दिखाया गया था – डॉ. भीमराव अम्बेदकर और जवाहरलाल नेहरू–वे इससे बिल्कुल आहत नहीं हुए थे। जिन शंकर पिल्लई ने यह कार्टून बनाया था, उन्हें इस देश ने सर-आंखों पर लिया, वे पत्रकार और लेखक से भी अधिक एक संस्कृतिपुरुष थे, जिनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिये उन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। उनका यशस्वी जीवन १९८९ में, यानी अब से २३ वर्ष पूर्व समाप्त हो गया। लेकिन हमारे अभी के विद्वान और विवेकी सांसद पूरे ६३ वर्ष पुराने और एनसीईआरटी की एक पाठ्य पुस्तक में अब से छह साल पहले पुनर्मुद्रित इस कार्टून से इतने आहत हुए कि उन्होंने न सिर्फ सरकार को तत्काल इस किताब को चलन से बाहर करने, बल्कि मानव संसाधन मंत्री को यहां तक कहने तक मजबूर कर दिया कि वे इस कार्टून को बनाने वाले के इरादों की जांच करायेंगे।

हमें सोचना होगा कि इधर कुछ समय से हम कहीं एक चिड़चिड़े और असहिष्णु राष्ट्र में तो नहीं बदलते जा रहे हैं। कार्टूनों से मठमारी करने का सिलसिला जिस तेजी के साथ पश्चिम बंगाल से भारतीय संसद तक पहुंचा है, उसे देखते हुए अपने लोकतंत्र के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर शक होने लगा है। जीवंत एवं जरूरी मुद्दों को ताक पर रख कर जब गढ़े मुर्दे उखाड़े जाते तब देश ६० वर्ष पीछे चला जाता है। कार्टून जैसे राजनीतिक स्वार्थ के मुद्दों से हम ताकतवर बन सकते हैं, महान् नहीं। महान उस दिन बनेंगे जिस दिन किसी निर्दोष का खून इस धरती पर नहीं बहेगा। जिस दिन कोई भूखा नहीं सोएगा, जिस दिन कोई अशिक्षित नहीं रहेगा, जिस दिन सत्ता की कुर्सी पर कोई राजा बन कर नहीं, सेवक बन कर बैठेगा। जिस दिन शासन और प्रशासन में बैठे लोग अपनी कीमत/ताकत नहीं, मूल्यों का प्रदर्शन करेंगे। यह आदर्श स्थिति जिस दिन हमारे संसदीय चरित्र में आयेगी, उस दिन महानता हमारे सामने होगी। फूलों से इत्र बनाया जा सकता है, पर इत्र से फूल नहीं उगाए जाते। उसके लिए बीज को अपनी हस्ती मिटानी पड़ती है।

लोकसभा कुछ खम्भों पर टिकी एक सुन्दर ईमारत ही नहीं है, यह एक अरब से अधिक जनता के दिलों की धड़कन है। यदि हमारे प्रतिनिधि ईमानदारी से नहीं सोचेंगे और आचरण नहीं करेंगे तो इस राष्ट्र की आम जनता सही और गलत, नैतिक और अनैतिक के बीच अन्तर करना ही छोड़ देगी। नये-नये नेतृत्व उभर रहे हैं लेकिन सभी ने देश-सेवा के स्थान पर स्व-सेवा में ही एक सुख मान रखा है। आधुनिक युग में नैतिकता जितनी जरूरी मूल्य हो गई है उसके चरितार्थ होने की सम्भावनाओं को उतना ही कठिन कर दिया गया है। ऐसा लगता है मानो ऐसे तत्व पूरी तरह छा गए हैं। खाओ, पीओ, मौज करो। भला इन स्थितियों के बीच संसद कैसे आदर्श बने? सत्ता और स्वार्थ ने अपनी आकांक्षी योजनाओं को पूर्णता देने में नैतिक कायरता दिखाई है। इसकी वजह से लोगों में विश्वास इस कदर उठ गया है कि चौराहे पर खड़े आदमी को सही रास्ता दिखाने वाला भी झूठा-सा लगता है। आंखें उस चेहरे पर सचाई की साझी ढूंढती है। किसी भी राजनीतिक दल के पास आदर्श चेहरा नहीं है, कोई पवित्र एजेंडा नहीं है, किसी के पास बांटने को रोशनी के टुकड़े नहीं हैं, जो नया आलोक दे सकें। संसद की साठवीं वर्षगांठ एक अवसर है पूरे संसदीय दृश्य की समीक्षा का, संसद के सुदृढ़ होने का। उसके गौरवपूर्ण इतिहास के लिए कामना है कि उसे शुद्ध सांसें मिलें। संसद और लोकतंत्र की अस्मिता को गौरव मिले। ●

ई-२५३, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
२५ आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-९२

# "यादाँ में झुन्झुणूँ"

– **अम्बु शर्मा**, कोलकाता

झुन्झुणूँ में प्रसिद्ध शायर था युसुफ हुसैन जी हकीम। १९६२ पछै मैं जद-कदे भी झुन्झुणुँ जावतो तो टूटती-टेम (३/४ बजे साँझ) म्हारै ४-जणां की बैठक, साहाँ रै कुवै कनै, मोदी-रोड पर, शिष्य बदरी प्रसादजी मोरवाळ रै मुद्रणालय में होवती। दो-कक्ष रो चोखो थो मुद्रणालय ऊर बाहर उँचो सो बड़ो चबूतरो भी थो; उण पर ही म्हे चारु भी जमता (१) स्वयं शिष्य बदरी प्रसादजी मोरवाळ, प्रयागराजजी मोदी, हकीमजी यूसुफ हुसैन जी अर जन गन-सम्पर्काधिकारी कविवर डॉ. तारादत्तजी निर्विरोध। कविता होती, शायरी होती, मैं भी हिन्दी-गीत सुणाया करतो तथा राजस्थानी-कवितावॉ भी। बदरी प्रसादजी हाँसता-हंसाता तथा प्रयागराजजी मोदी, झुंझुणू में चोखा सेठाँ में स्यूँ था सो अनेक देस-दिसावर घुम्योड़ा था; अनेक भांत री 'आप-बीती अर पर-बीती' सुणाया करता।

किन्तु मद्यान्तर में हकीमजी, प्रेस रै कर्मचारी ने ५०/- रो नोट देकर, काँजी रा बड़ा अर पुरोहितजी रा पेड़ा मंगवाता। कदे और पचास रुपिया प्रयागजी मोदी देता। निर्विरोधजी री जन-सम्पर्क विभाग की राजकीय जीप (मोटर कार) चबूतरै रै सहारै खड़ी ही रैवती। पर चोखो अर भरपूर-मात्रा में कलेवो मीठो-फीको आ ज्यातो। मैं नटा-नाटी करतो तो हकीमजी बोलता - यार अम्बिका चरण आ टूटती टेम है सो इकर हलका-साग तो भावै कोनी किन्तु मीठी-मीठी भूख तो लागै होली, बिना-बिगाड़ वाळो ओ सात्विक कलेवो अर्थात् चोखा पेड़ा अर सुस्वादु कांजी रा वड़ा, रामजी देवै तो पावाँ।"

अठे कोलकाता में भी, १९६२ में हरीसन रोड (महात्मा गान्धी रोड) दोनु टेम धोई जाती तद आस्तिक बूढ़ी मारवाड़ी लुगायाँ, गंगाजी न्हाकर बवड़ती-टेम, कीड़याँ नैं आटो अर कबूतराँ नैं दाणा डालती किन्तु बै, शनिवार नैं, छात पर चढ़कर, चीलाँ नैं बड़ा-पकोड़ै अवश्य लुटाती। आज भी; मेरै निवास रै पिछवाड़ै पाँच-तल्लै री बड़ी बाड़ी है 'पञ्च-विला'। इणरी छात, विशाल है तथा ७०-फुट ऊँचो मोबाईल टॉवर भी लाग्योड़ो है। इण री बड़ी छात पर भी शनिवार नैं, कुछ सेठाणियाँ चील-कागला नैं बड़ा-पकौड़ी लुटावै है नियमित।

पण एक न्यारो किस्सो भी ऐतिहासिक है कै चूँकि सेठ बिलासरामजी खेताणा, मन्दिर रै पिछवाड़ै वालै सार्वजनिक मार्ग पर, मन्दिर स्यूं सीधा ही पिछबाड़ै री छोटी कोठी में जावणै हेतु, तीसाँ फुट लम्बै रास्ते पर गाटर छवा दी नी। बा बात मुसलमानां नैं अपरोपी लागा सौ बै बठे स्यूं निकलण वाळै चेजारां रा ताजिए नैं, उपा बरस इतणो बड़ो बणायो कै बिनां गाटर उतारै, ताजियो निकळ नहीं सकै। उण टेम झुंझणूँ में नाजिमजी, मुसलमान था। बै, कुछ परै पूर्व में पड़णै वाळी एक हवेली रो खुर्रो भी छुड़वा दियो थो सो सेठजी बिलासरामजी री गार्टरस भी उतरवा दी। इण दुःख में सेठजी बिलासरामजी खेताण, जन्म-ग्राम झुन्झुणू त्याग कर, काशीजी री निजी कोठी चल्या गया। बठे ही निधन हुयो किन्तु निधन पछै उणरा छैनूँ वेटा, हिन्दू-नाजिमजी आया स्यू, वै गार्टर्स पाछी चढ़वाई।

यूँ झुझुनूं-ग्राम री, सत्य घटनावो-सम्बन्धी पोथी लिखी जावै तो सहस्रां-पृष्टां में अनेक वोल्यूम्स छपै कारण झुन्झुनू-ग्राम, अरावली-पर्वत श्रृंखला में होवणे स्यूँ ५००० बरस रो इतिहास तो आज भी सुरक्षित राखै है अर उणस्यूं पुराणो इतिहास भी, पांचूं-पाना (राव शेखा रै वंश रा शार्दूल सिंहजी रा पाँचू बेटां रै हिस्सै री जागीरदारी अर पाँच गढ़) रै बही-भाराँ, चारणाँ इत्यादि द्वारा लिखित डिंगळ भाषा री पाण्डुलिपियों में सहज-सुरक्षित प्राप्त है। 'हरि-अनंत, हरि-कथा अनंता' री ज्यूं ही झुंझुनू ग्राम रा इतिहास-पुराणा भी अनन्त है। झाझड़-ग्राम रा सुरजनसिंहजी, काळी-पहाड़ी ग्राम रा रघुनाथ सिंहजी अर झुंझुणूँ रा ही हकीम यूसुफ हुसैन जी तथा वर्तमान में झुन्झुणूँ का दो-साहित्यकार मोहनसिंहजी अर राजेन्द्रजी कसवा भी, झुंझणू-ग्राम रो इतिहास लिख्यो है। बिसाइ-ग्राम रा डा. उदयवारजी शर्मा भी, आप रै शोध-ग्रण्थ 'शेखावाटी रै इतिहास' में झुझुन रो बैसी वर्णन करयो है जिणनै प्रकाश में करोड़पाति-फकीर डॉ. कासीरामजी वर्मा (अमेरिका-प्रवासी) रो विसेष आर्थिक सहयोग भी, सदा ही नियोजित रैवै। इब इतणो; बेसी और-कदै। ●

२०५, एस के देव रोड, कोलकाता - ७०००४८

# भ्रष्टाचार पर न्यायपालिका सख्त

## "कफन में जेब नहीं होती"

– सुरेंद्र किशोर

भ्रष्टाचार के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा की गई समय सीमा का निर्णय एक शुभ संकेत है। कोर्ट ने मंत्रियों, सरकारी अफसरों-नौकरशाहों के विरुद्ध भ्रष्टाचार की शिकायत पर जांच का फैसला लेने के लिए चार महीने की समय सीमा तय की है। अर्थात् इस अवधि में प्रधानमंत्री या संबंधित मुख्य अधिकारी कोई निर्णय नहीं ले पाते हैं तो इसे जांच प्रारंभ करने की मंजूरी माना जाएगा।

जस्टिस जी. एस. संघवी व ए. के. गांगुली की खंडपीठ ने जनता पार्टी अध्यक्ष डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी की याचिका पर फैसला सुनाते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ अर्जी दाखिल करना हर भारतीय का संवैधानिक अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट ने समय सीमा से अनुमति ना मिलने पर क्या प्रावधान होना चाहिए, का निर्णय संसद पर छोड़ दिया, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि चोर-चोर मौसेरे भाइयों की अब नहीं चलेगी तथा प्रशासनिक अधिकारियों की लाल फीताशाही के चलते अनावश्यक देरी पर अंकुश लगेगा तथा सीवीसी व अन्य मंत्रालयों द्वारा भ्रष्ट नौकरशाहों के विरुद्ध सैकड़ों लंबित अर्जियों को गति मिलेगी।

सुप्रीम कोर्ट का उपर्युक्त निर्णय मील का पत्थर साबित होगा तथा भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता में एक नया विश्वास जागेगा कि दादागिरी का पतन होना प्रारंभ हो गया है। परंतु! परंतु!! परंतु!!! हमें यह अवश्य याद रखना होगा कि हम सभी भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान में सक्रिय योगदान दे सकते हैं यदि हम स्वयं गतिविधियों में शामिल ना हों तथा अपनी आपराधिक गलतियों पर पर्दा डालने के लिए अनाप-शनाप शिकायतों से बचें तथा भ्रष्टों के विरुद्ध सबूत इकट्ठा करने व गवाही देने का साहस जुटाएं तो भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना केवल समय की बात है। सुप्रीम कोर्ट ने २जी स्पेक्ट्रम मामले में कई कंपनियों के लाइसेंस निरस्त कर एक सराहनीय निर्णय लिया है।

**मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ठीक ही कहा था कि कफन में जेब नहीं होती और सारी दौलत यहीं छूट जाती है। तब भ्रष्ट तरीके से कमाई क्यों?** नीतीश कुमार की बात मौजूं है और बड़े मार्के की भी। एक कहावत भी है कि पूत सपूत तो क्यों धन अरजे? पूत कपूत तो क्यों धन अरजे? यानी पूत यदि सपूत होगा तो उसके लिए पहले से धन एकत्र करके उसे विरासत में देने की कोई जरूरत नहीं। वह अपने लिए खुद कमा लेगा। यदि कपूत हुआ तो पिता का अर्जन किया धन भी बरबाद कर देगा। इस तरह की न जाने कितनी नसीहतें बड़े चतुर सुजान अनुभवी लोग सदियों से हमें देते रहे हैं। पर सुधार के लक्षण नहीं है, क्योंकि नाजायज तरीके से धनोपार्जन करने वाले कुटिल लोग दुष्ट व देशद्रोही प्रभावशाली लोगों को रिश्वत दे-देकर छूटते चले जाते हैं। भ्रष्टाचार दरअसल अब देशद्रोह का स्वरूप ग्रहण करने लगा है। भ्रष्ट लोगों को कठोर सजा ही उन्हें सबक सिखायेगी। पर भ्रष्ट लोगों के अंतिम दिनों में अभूतपूर्व कष्टों के कुछ उदाहरण मौजूदा भ्रष्ट लोगों के लिए शायद नसीहत बने। कई बार यह भी कहा जाता है कि आप जो कुछ इस जन्म में करते हैं, उसका परिणाम भी इसी जन्म में किसी न किसी रूप में आप भुगत लेते हैं। ईश्वर बड़ा न्यायी है। आये दिन ऐसा उदाहरण देखा जा रहा है कि पिता ने भ्रष्ट तरीकों से पैसे जुटा कर बेटे-बेटियों को अपने नाजायज पैसों के बल पर उच्च शिक्षा दिलवा दी।

डिग्रियां लेकर संतानें विदेशों में बस गयी। इधर पिता-माता का बुढ़ापा कटे नहीं कट रहा है। सुबह शाम रोना। उनका दुखड़ा सुनने वालों की भी बड़ी कमी रहती है। क्योंकि अपने जवानी के दिनों में उन्होंने पैसों के अलावा किसी का ध्यान नहीं रखा था। कौन जायेगा उनके यहाँ? हालांकि यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि जिन संतानों ने अपने मां-बाप को उपेक्षित छोड़ा है, उन सबको नाजायज पैसों से ही पाला पोसा गया है। एक आइएएस अफसर ने अपने सेवा काल में खूब धन कमाया। ऐसे समय में भी काफी संपत्ति बनायी जिस जमाने में बहुत कम ही आइएएस अफसर भ्रष्ट हुआ करते थे। उन्हें उम्मीद थी कि ये पैसे और अपने बाल बच्चे रिटायर होने पर उनके काम आयेंगे। पर कोई कारणों से उनका बुढ़ापा अंततः उनके बाल बच्चों के साथ नहीं कटा। बाल बच्चों ने उनकी संपत्ति ले ली और उन्हें दूध की मक्खी की तरह परिवार से अलग कर दिया।

अन्य बातों के अलावा बाल बच्चों से बुढ़ापे में दूर रहना ही बहुत बड़ी विपदा है। एक बड़े नेता थे जिनकी बिहार में कभी तूती बोलती थी। गांधी-नेहरू युग में भी सरकारी फाइलें बेच कर उन्होने खूब धनोपार्जन किया। एक दर्जन

मकान बनवाये पर अंत दर्दनाक रहा। कफन में जेब होती तो अपने साथ कुछ ले भी जाते। चारा घोटाले के आरोपितों में कई नेता व आइएएस अफसर भी हैं। कुछ की हालत काफी दयनीय है। कुछ अन्य की होनी वाली है। **पशुपालन विभाग के एक अभियुक्त अफसर बाल बच्चों की उपेक्षा के बीच इंतकाल कर गये। बाल बच्चों ने उन्हीं पैसों को जब्त कर लिया जो उन्होंने बुरे दिनों के लिए नाजायज तरीके से कमाये थे।** एक-दो ऐसे मामलों के बारे में भी इन पंक्तियों के लेखक को व्यक्तिगत तौर पर पता चला था जो इसी तरह के थे। पीड़ित व्यक्ति ने नाजायज तरीके से सरकारी खजाना लूट कर खूब धन कमाया। सेवानिवृत होने पर कैंसर से पीड़ित हो गये। परिजन ने देखा कि सारे पैसे फूंक देने पर भी वे बचेंगे नहीं, इसलिए वे निधन से पूर्व सामान्य सेवा-सुश्रुषा को भी तरस गये।

एक प्रभावशाली नेता जी थे। **आजादी के बाद उन्होंने जनता की सेवा के बदले अनवरत धनोपार्जन पर ही अपनी अधिकांश शक्ति लगा दी।** हर बड़े शहर में मकान बनाये। कुछ लोग उनसे जलते थे तो कुछ लोग घृणा भी करते थे। उनको कोई फर्क नहीं पड़ता था। इन पंक्तियों के लेखक ने भी उनकी चलती देखी थी। **पर जब उनका शरीर ढलने लगा तो उनके अत्यंत करीबी परिजनों ने ही उन्हें छोड़ दिया और उनकी संपत्ति जरूर ग्रहण कर ली। अफवाह फैली कि उनका गला दबा दिया गया था, ताकि जल्दी ही मुक्ति पा ली जाए। संपत्ति का लोभ जो न कराये।** उनके पास अधिक संपत्ति नहीं होती तो शायद वे कुछ अधिक दिनों तक जीवित रहते। इस तरह के अनेक उदाहरण आये दिन मिलते रहते हैं। यदि इस विषय पर कोई व्यक्ति रिसर्च करके किताब लिखे तो उन भ्रष्टों के लिए अच्छी सबक होगी। चारा घोटाले के अनेक आरोपितों की हालत भी इन दिनों खराब ही है।

ऐसी घटनाएं सामान्य लोगों के जीवन में भी होती रहती हैं और विशिष्ट लोगों के जीवन में भी। अधिकतर बातें बाहर नहीं आ पातीं। पैसे के लिए अपने ही परिजन बुजुर्ग को सताने लगते हैं तो बुजुर्ग कई बार लोकलाज से अपनी पीड़ा किसी को नहीं बता पाते। कई बार कुछ अफवाहें भी सामने आती हैं। पर अधिकतर मामलों में सच्चाई भी होती है। मुट्ठी बांधे आये हो और हाथ पसारे जाओगे। फिर क्यों गरीबों का हक मार कर अपनी दौलत बढ़ाना? अरे भई अब भी चेत जाओ। लोक-परलोक सुधर जायेंगे। ●

(साभार – प्रभात खबर)


# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

## वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया।
- अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपाएं।
- नेग का कार्यक्रम एक ही हो।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष भी वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब आदि का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

**सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है।**

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

## उच्च शिक्षा कोष
## आवेदन पत्र आमंत्रित

समाज में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित एवं सहयोग प्रदान करने हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत एक **"उच्च शिक्षा कोष"** का गठन किया गया है।

**मेधावी एवं जरुरतमन्द छात्र-छात्राओं से उच्च (पोस्ट ग्रेजुएट) प्रबन्धन, तकनीकी आदि शिक्षा में सहयोग के लिये आवेदन पत्र आमंत्रित है। उक्त आवेदन पत्र का प्रान्तीय अथवा जिला सम्मेलन शाखाओं द्वारा अनुमोदित होना आवश्यक है।**

आवेदन पत्र में नाम, पूरा पता, फोन, ईमेल, शिक्षा, अभिभावक की वार्षिक आय के साथ जिस उच्च शिक्षा के लिये सहयोग प्रार्थित है उससे सम्बन्धित सभी विवरण, कोर्स शुल्क, सहयोग राशि आदि जानकारी भेजने की कृपा करें।

अतिरिक्त जानकारी के लिये सम्पर्क करे –

**महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन**
**१५२-बी, महात्मा गांधी रोड**
**कोलकाता - ७०० ००७**
**फोन एवं फैक्स – ०३३-२२६८०३१९।**

**हरिप्रसाद कानोड़िया**
अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

**प्रह्लाद राय अग्रवाल**
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

**उच्च शिक्षा कोष में मुक्त हस्त दान दें – ८०जी के अन्तर्गत कर मुक्त**
**Cheques may be issued in favour of "Marwari Sammelan Foundation".**

# टूटते परिवार, बिखरते सपने

– भँवर लाल गट्टानी

वर्तमान समय की यह एक ज्वलन्त समस्या है। इस समस्या के पीछे कारण क्या है इस बात पर विचार करने की जरूरत है। पहले संयुक्त परिवार होते थे, परिवार का मुखिया एक होता था, सब लोग उसकी बात का आदर करते थे। उनके मन में कोई इगो की भावना नहीं होती थी। समय में बदलाव आया, लोगों ने व्यवसाय या नौकरी के लिए गाँव, कस्बा छोड़ कर शहर की ओर रुख किया। अगर परिवार में चार भाई है तो शहर में इकट्ठा रहने के लिए इतना बड़ा घर मिलना मुश्किल होता है, सब अलग अलग रहने लगे। अलग रहते हुए भी होली दीवाली या दूसरे त्योंहार या कोई उत्सव सब इकट्ठे होकर बड़े भाई के यहां मनाते थे, इकट्ठे भोजन करते थे। समय में फिर बदलाव आया। टेलिफोन की सुविधा मिली तब एक दूसरे के यहा आने जाने की परम्परा भी बन्द हो गई, टेलिफोन पर ही प्रणाम करके आशीर्वाद ले लेते थे। और जब से मोबाइल हाथ में आया है तब से बातचीत भी बन्द हो गई अब केवल एस.एम.एस से ही काम चला लेते है।

दूसरे कारण ये है कि आज की पीढ़ी में धन की लिप्सा बढ़ती जा रही है। सब बहुत जल्द टाटा, बिड़ला या मित्तल, अम्बानी की तरह धनवान बनने के ख्वाब संजोये हैं। सोच में संकीर्णता आ गई है। और जब पति पत्नी के मन में यह विचार आ जाता है कि हम जो कमा रहे हैं वह दूसरे पर खर्च क्यों करें। तब परिवार के टूटने के आधार नजर आने लगते हैं। परिवार में अगर एक भाई दस हजार रुपये कमाता है और दूसरा भाई पचास हजार रुपये महीना कमाता है तब मन में यह भावना आ जाती है कि क्यों न हम अलग हो जायें ताकि हमारा खर्च भी कम होगा और बचत ज्यादा होगी। लेकिन हकीकत में खर्च कम नहीं होता बल्कि बढ़ जाता है कारण कुछ खर्चे नार्मल होते हैं जैसे बिजली, पानी, मकान भाड़ा, रसोई गैस, आया नौकर इत्यादि, जो एक जगह होते थे वही अब दोनों को अलग अलग देना पड़ रहा है। परिवार में अगर छोटा भाई अधिक कमाता है तब वही अपने आप को बड़ा समझने लगता है वह चाहता है कि उसी की बात सब माने। आज से साठ साल पहले एक गीत फिल्म में गाया गया था कि –

**बाप बड़ा ना भैया, भैया सबसे बड़ा रूपैया**
**जिसके पास नहीं रूपैया, उसको कोई न पुछैया,**
**भैया सबसे बड़ा रूपया।**

उस समय में कवि की एक कल्पना मात्र थी, जो आज

हकीकत में देखी जा रही है। इस बात का इगो जब मन में आ जाता है तब वह बड़ों का सम्मान करना भी भूल जाता है और तब परिवार के टूटने की नौबत आ जाती है। सब कुछ बिखरने लगता है और इससे भी आगे की स्थिति पर विचार करें तो ये ईगो की भावना पति पत्नी को भी एक दूसरे से अलग होने पर मजबूर कर देता है। पुरानी एक कहावत है कि बन्धी मुट्ठी लाख की और खुली तो प्यारे खाक की।

आजकल परिवार को तोड़ने में टीवी या दूरदर्शन भी एक अहम भूमिका निभा रहा है। टीवी पर आज जितने भी धारावाहिक दिखाये जा रहे हैं सभी घर घर में जहर घोलने का काम कर रहे हैं। कोई भी ऐसा धारावाहिक नहीं दिखाया जाता जिसमें कोई षड़यन्त्र न हो, कोई खलनायक या खलनायिका न हो। पारिवारिक विषयों पर कहानी दिखाई जाती है मगर सब एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए षड़यन्त्र रचते रहते हैं और दर्शक परिवार के लोग बड़ी तन्मयता से ये सब सीरियल देखते हैं और इस स्लो पायजन को आत्मसात करते जाते है।

पाश्चात्य संस्कृति का हावी होना भी परिवारों के टूटने का कारण है। क्योंकि पाश्चात्य देशों में तो कोई संयुक्त परिवार है ही नहीं। ये पारिवारिक संस्कृति तो अपने देश की संस्कृति है हिन्दुस्थान की संस्कृति है। लेकिन आज हम लोगों की सोच भी बदल गई है। हम सब अंगरेजी के दीवाने होते जा रहे हैं। आज कोई भी सम्भ्रांत परिवार अपने बच्चों को हिन्दी स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहता। जो इंग्लिश मीडियम स्कूल सबसे महंगा होता है सब उसी में भरती करना चाहते हैं। चाहे लाख रुपया होने अब (यानि सीधी सरल भाषा में घूस) भी देना पड़े तो किसी भी प्रकार वह डोनेशन देकर भर्ती करवाते है। बच्चे को स्कूल में इंग्लिश में बात करनी ही है घर पर भी माँ बाप अंगरेजी शब्द ही सिखाते हैं। बच्चा हिन्दी में कमजोर रह जाता है न उसे अपनी मातृभाषा या राष्ट्र भाषा ठीक से पढ़नी आती है और न हीं ठीक से लिखनी। और माँ बाप गर्व महसूस करते हैं कि हमारा बेटा तो इंग्लिश में बोलता है, इंग्लिश में खाता है, इंग्लिश में सोता है और इंग्लिश में ही उठता है, उसे तो हिन्दी आती ही नहीं। एसे बच्चे अधिक अंक लाने के चक्कर में किताबी कीड़े बन कर रह जाते है, बड़ी बड़ी डिगरियां ले कर वे क्वालिफाईड तो हो जाते हैं मगर एजूकेटेड नहीं हो पाते।

व्यवहारिक ज्ञान के नाम पर शून्य होते है।

परिवार टूटने का एक कारण ये भी होता है कि सास बहू में सामंजस्य न बैठ पाना। पहले के जमाने में शादियां छोटी उम्र में हो जाती भी। १४ से १८ वर्ष की उम्र में शादी हो जाती थी। लड़की वहू बन कर जब दूसरे परिवार में आती थी तो अपने आप को उसी परिवार के रीति रिवाजों में ढाल लेती थी और एडजस्ट हो जाती थी। मगर आजकल लड़कियां बड़ी उम्र में शादी करती है। यानि तीस वर्ष के बाद। क्यों कि २५ वर्ष तक तो पढ़ाई ही करती रहती है और फिर ५-७ साल नौकरी में अपना कैरियर तलाशने में बिता देती है। माँ बाप को भी कोई एतराज नहीं होता क्यों कि लड़की अर्थोपार्जन करके घर में आर्थिक मदद करती है। २५-३० साल की लड़कियों में परिपक्कता आ जाती है। उनका अपना एक व्यक्तित्व बन जाता है और शादी के बाद दूसरे परिवार में वह अपना व्यक्तित्व साथ ले के जाती है, इसीलिए वहां परिवार में एडजस्ट होना मुश्किल होता है। क्योंकि हर बात पर वह अपना तर्क रखेंगी और सहनशीलता की कमी के कारण घर का वातावरण तनाव पूर्ण हो जायेगा। सास चाहती है कि बहू उसे माँ का सम्मान दे मगर खुद वहू को बेटी मानने को तैयार नहीं। पति चाहता है कि उसकी पत्नी सीता जैसी हो मगर खुद राम बनने को तैयार नहीं। ऐसे वातावरण में आरोप प्रत्यारोप होते हैं और धीरे धीरे परिवार की शांति भंग हो जाती है। पत्नी, पति को लेकर नया घर खोज लेती है। पति अगर माँ बाप का साथ न छोड़ना चाहे तो पत्नी तलाक लेने की सोच लेती है और कानून का सहारा ले लेती है। परिवार टूट जाते हैं।

इस टूटन को बचाने के लिए हमें स्वयं को कोशिश करनी पड़ेगी, अपनी सोच को बदलना होगा। अपनी मातृभाषा का सम्मान करना होगा। बच्चों को पारिवारिक संस्कारों में ढालना होगा। युवा पीढ़ी को आज हम नहीं बदल सकते। उनमें बचपन से ही संस्कारों का बीजारोपण करना होगा। तभी वे देश के होनहार नागरिक बन पायेंगा। पारिवारिक भूलों को समझेंगे और परिवार टूटने से बचेंगे। ●

१८९/१/१ बाँगुड़ एवेन्यू, ब्लाक - बी
कोलकाता ७०० ००१

**भूल सुधार**

समाज विकास के गत अप्रैल २०१२ के अंक में पृष्ठ १३ एवं १७ पर प्रकाशित समाचारों के अन्तर्गत फोटो कैप्सन में मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी का नाम भूलवश दिलीप गांधी छप गया था, जिसके लिए हमें खेद है। पाठक, कृपया भूल सुधार लें।

# SMS की दुनिया ☺

Wise & successful people always
have 2 things, 'silence & smile',
Smile solves the problem &
silence avoids the problem.

किसी को पाने के लिए हमारी सारी खुशियां भी कम पड़ जाती है
और खोने के लिए बस एक कमी ही काफी है।

Every problem in life has a gift inside.
So don't get upset when you face problem.
It may have more beautiful ending than your expection.

Never calculate a person on his present position
Because –
time has the power to change an invaluable stone into a valuable Diamond.

अच्छी यादें आपकी आंखों में तभी नमीं लाती है,
जब आपको ये एहसास हो
कि आप उन यादों को दुबारा नहीं जी सकते।

दुनिया की भीड़ में इंसान चाहे सब कुछ भुल जाए.....
कितनी ही मौज मस्ती में खो जाए.....
पर अकेले में वो उसे ही याद करता है
जिसे वो दिल से प्यार करता है।

Never feel all door r closed in our life.
All doors may not be locked
but they may be waiting for your gentle push.

किसी संत ने कहा है –
पत्थरों पर नाम खुदवाने की बजाय
लोगों के दिलों पर राज करना सीखो।

एक खुबसूरत सोच,
दूसरों की इतनी गल्ती माफ कर दिया करो
जितनी जल्दी आप ऊपरवाले से
अपने लिये माफी की उम्मीद रखते हो

छोटे से दिल में गम बहुत हैं
जिन्दगी में हर पल मिलते जख्म बहुत है
मार डालती कमबख्त दुनिया कब की मगर
प्रभु की कृपा में दम बहुत है।

राजस्थानी कहानी

# दुर्घटना या घटना

– नथमल केडिया
(साहित्य महोपाध्याय)

बड़ा काकाजी कनै आया म्हेनें सबा ड्गोड़ पहर होयगा हा। इन वापस घरे जाने बावत उठ्यों हो कि दादाजी आयगा और म्हेनें उठेड्यो देख और जाने री तैयारी देख बोल्या –

कवि, थोड़ी देर बाद सागै ही चालांगा सो चाहे उरीने परीने टाइम बिता और पान पत्तो खाले। बस १५ मिनट इन लोगां सूँ मिलल्यू। दादाजी के लिये मन माय इत्तो आदर है कि उनारे बोलने रे वाद मेरो ठैरनो लाजिम हो।

अठै बड़ा काकाजी तथा दादाजी रै बारे माय कुछ बतादू। काकाजी मेरै जिगरी दोस्त रमेश रा बाऊजी है। मेरो दोस्त-आपनै कै बताऊँ। इत्तो होनहार, इत्तो चातर हो कि लाखों मॉय चुगमा हो। भणाई भी भोत ऊँची करी और एक विदेशी कम्पनी माय ऊँचे पोस्ट पर चुन ली गयी। काकाजी तथा काकीजी तो ऊँके ऊपर आपरो स्यो कुछ निछावर कर राख्यो हो। पैली इनाको बजाजी रो बड़ो कारबार हो। ऊँ से इज्जत तथा साख भी भोत ही पर एक डेढ़ साल रे भीतर ही बेटी-बेटे रो ब्याव रचायो। ऊँ मैय खरच तो होने हो। साची पूछो तो काकाजी हाथ का पोला भी है। बेटे बेटी को लाड़ प्यार कुछ ज्यादा ही है सो बेटी के लिये घर वार आपसे ऊँचो इ ढूंढ्यों। भौत चोखे घर मायं परणा सी। सॉ संमाई सूं बेसी रुपया लगाना पड्या। उठीनै बेरो पढ़ाई रे दौरान ही आपरो एक सहपाठनी नै पसंद करली। लड़की सब तरह सूँ भोत आछी पर मां बाप कनै इनाके सम्बन्ध लायक जोगाड़ कोनी। पर कयो ना - लड़के री पसन्द इना रे लीये लोह री लीक। सो व्यावऊं के सागै ही कर्यो। पर खरचो वरचो सान सौकत मॉय कोई कमी-नि राखी। सगा समधी-गॉम गोठरा लोग - सब सराहना करी। बहू भी सुन्दर सुसील पढ़ी लिखी घर सोमारु। लोग देखर बोल्या सेठजी रा भाग खुलगा। हाँलाकि इन सब कात्रा मॉय और सवसूँ बड़ी बात आपरी समायी रे परबार काम करने सूँ निज री जमापूंजी पूरे गयी पर लड़के रो भविष्य इत्तो बठिया दीस रयो हों कि चालतो कारवार बंद करने मॉय भी इज्जत पर जिको धक्को लागर्यो हों ऊं की परवा नीं करी। और बेटो भी बारबार या ही कै रयो हो – बाऊजी, तीन चार साल री ही तो बात है – भणाई रै बावत जिको लोन लियो है वो चुक जावे पीछू बड़ो फ्लेट लेयकर आपां सागे ही रैवाला। पर मानखो सोचै कै और ऊपर वालो कै करेलो या बात तो पैली कोई जान नी सकै। इनरी भी सारी प्लेनिंग घरी री घरी रै गयी। सैंर री जिकी कम्पनी मांय रमेस काम कर रयो हो – काम करता करता ऊँकी तवियत एकाएक खराव हुयी और ईसी खराब हुयी कि साची पूछों तो अस्पताल भी नी पूग सक्यो और सव खतम्। पीछू जद पोस्ट मार्टम रिपोर्ट आयी तो ऊँ मांय लिख्योड़ो हो – वैसी चिन्ता व एकजर्सन सूं मौत हुयी।

हाँ तो दादाजी म्हारे साथे घर सूँ रवाना हुया - पर आप मांय ही ड्वेड़ा म्हे बात चलाने री चेष्टा करी–दादाजी, इनरी बहू भी इत्ती आछी मिली कि छमाई रे बाद जाती बगत आपरी सासू न बोली - मॉ - ऊपरलो म्हेने आप सरीखो घर-वर देयकर तूटी ही पर मेरो तकदीर इयॉरो है कि कीं नी रैयो पर उनारो लोन लिपेड़ो है ऊँ री ऑच म्हें आप तक नी आवने दूंगी जीं तरै भी होवेगो चुकाऊंगी। ऊँ की बात सुनकर काकीजी काकाजी आश्चर्य सूं देखता इ रॅयगा। पर दादाजी तो एकदम गुमसुम। एका एक बोल पड्या–आज तेनै एक बात केवनै रो भोत मन है। चाल कंठै कोई बेंच पर बैठाँ। सो म्हे दोनूं जना पार्क मॉय जायकर बैंच पर बैठगा। दादाजी बैठने रे सागे बोलनो चालू कर्यो – कवि, कई दिनाँ सूँ बात पेट माँय उभड़ धुम री ही। भोत पैली छापै मॉय भणी ही। विदेस सूँ एक दम्पत्ती देस मांय घूमने आया। सागै उनरो सात साल को छोरो तथा चार पांच साल री छोरी ही। वे लोग उठै एक क्लव मॉय वासो कर्यो। ऊँ क्लव मॉय सारी सुविधा रे सागै एक स्वीमिंग पूल भी हो जिकै रो पाणी इत्तो मोती वरणो हो कि तल दीखतो रैवे। ऊँके किनारे तीन चार

भिखारियॉ रा छोरा भी बैठ्या रैवता। आप पाणी में पीसो गैरो और वे तल सूं मुंडे सू पकड़कर आपरै पास ले आवै - - वो पीसो उनरो हो जावे। ऊँ अंग्रेज दम्पती रै छोरा छोरी नै ई बात मॉय इत्तो मजो आयगो कि वार वार वै पीसा फैंके तथा वे छोरा तालाव मॉय डूवकर निकाल ल्यावै। उन लोगों के पीसा की तो कमी ही कोनी सो तीन चार घड़ीयो ही कौतक करतो रैया उन भिखारी छोरा मांय तीन छोरा तो थक हारकर चल्या गया पीछू जब वाकी हालो छोरो भी जावनै लाग्यो और इनरा छोरा रो मत कोनी भर्‌यो तब ये लोग ऊँ छोरे नै लालच देनो सुरु करयो पैली पीसे रै सागै एक आवो तथा बाद मॉय एक रूपये तक कर दियो। छोरो लालच मॉय आवतो गयो - आखर मॉय जद वो पीसो मुण्ड़े सू पकड़कर सीढ़ियॉ ताई आयो तो ऊँ की सांस उखड़ने लागगी और वे लोगों रे देखता देखता चल बस्यो। ये लोग क्लव रै मेनेजर नै खवर भी कोनी कर सक्या। पर ऊँ दिना अंग्रेजाँ री चालती ही सो उन लोगॉ रै ऊपर कुछ भी नी हुयो। म्हे के बोलतो म्हे तो बात सुनतो रैयो-पर पीछू बोल्यो–दादाजी, ई घटना सूँ आपनै रमेस री घटना रो के मिलान। दादाजी उठता उठता बिलखता सा बोल्या – कवि! क्यूँ नी? ऊँडो ढूककर देखै तो दोनू जना लालच मॉय ई तो गया। हां डीग्रियाँ रो फरक जरुर है। म्हे देख्यो बारनै अंधेरो धिर रयो हो। पर म्हारै मन मॉय तो ऊंसूभी घणो अंधेरो धिर आयो हो। ●

४ए, शम्भुनाथ पण्डित स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ०२०

**कविता**

## आग

– **नथमल केड़िया**

मैं चाहता हूँ दरशन करना
आग का
आग जो कुछ कर गुजरने के लिये
किसी के दिल में जलती है
आग जो साकार होने के लिये
एक युवा के स्वप्न में ढलती है
आज कहीं नहीं दिखती वह आग
जिसने एक फकीर को डांडी से
नोआखाली तक नंगे पैरों दौड़ाया
संत को लगातार बारह वर्षों तक
भिक्षुक बन गाँव गाँव फिराया
भगत सिंह जैसे हजारों नौजवानों को
हँसते गाते फांसी पर लटकवाया
सन्यासी शंकराचार्य को सुदूर कालड़ी से
केदारेश्वर द्वारका तक भ्रमण करवाया
सचमुच बड़ी बलवती है यह आग
इसी आग के कारण गौतम, मीरा को
राज महलों से निकलना पड़ा
महाराणा प्रताप को भूखे प्यासे
जंगल जंगल भटकना पड़ा
हाँ आज वह आग दिखती नहीं कहीं भी
हमारे नैन रहे है तरस
कहीं नहीं हो रहा उसका दरस
पर इस आग ने जिसके भी दिल में ड़ेरा डाला ।
वह बन गया महामानव जग में सबसे निराला।।

**प्रेरक प्रसंग**

## जीवित धर्म

किसी धर्म को इसलिए अंगीकार मत करो कि वह सबसे प्राचीन है। उसका सबसे प्राचीन होना उसके सच्चे होने का कोई प्रमाण नहीं। कभी-कभी पुराने से पुराने घरों को गिराना उचित होता है और पुराने वस्त्र भी बदलने पड़ते हैं। यदि कोई नये से नया मत और पथ विवेक की कसौटी पर खरा उतरे, तो वह एक ताज़े गुलाब के समान उत्तम है।

किसी धर्म को इसलिए भी स्वीकार मत करो कि वह सबसे नया है। सबसे नयी चीजें समय की कसौटी पर न परखे जाने के कारण सर्वदा सर्वश्रेष्ठ नहीं होती।

किसी धर्म को इसलिए मत स्वीकार करो कि उस पर बहुत से लोगों का विश्वास है, क्योंकि विपुल जन-संख्या का विश्वास तो वास्तव में शैतान अर्थात अज्ञान के धर्म पर होता है। एक समय था जबकि विपुल जन-संख्या गुलामी प्रथा को स्वीकार करती थी, परन्तु यह बात गुलामी की प्रथा के उचित होने का कोई प्रमाण नहीं हो सकती।

किसी धर्म पर इसलिए भी श्रद्धा मत करो कि उसे थोड़े से चुने हुए लोगों ने माना है। कभी-कभी अल्प जन-संख्या किसी धर्म को अंगीकार कर लेती है, क्योंकि अज्ञान के कारण उसमें भ्रांत-बुद्धि होती है।

बस जिस चीज को मानो या जिस धर्म पर विश्वास करो, वह केवल उसकी निजी श्रेष्ठता के कारण। स्वयं जांच पड़ताल करो। स्वयं छानबीन करो। ●

– **स्वामी रामतीर्थ**

# देश में एक नए जनोन्मुखी राजनीतिक विकल्प की जरूरत

देश में आज राजनीतिक विकल्पहीनता की स्थिति नजर आ रही है। यूं तो कहने को हमारे यहां कांग्रेस के नेतृत्व में संप्रग एवं भाजपा के नेतृत्व में राजग के रूप में दो बड़े राजनीतिक ग्रुप हैं, जिन्होंने पिछले दो दशकों में लगभग पूरे समय तक केन्द्र में सरकार चलाई। इन दोनों गठबंधनों के केंद्र में सत्ता में रहने के दौरान आर्थिक नीति से लेकर विदेश नीति तक एवं व्यवहार में काफी समानता रही, जिसका अर्थ हुआ ये एक दूसरे के विकल्प नहीं रहे, क्योंकि विकल्प का अर्थ होता है, सुस्पष्ट अलग नीति और व्यवहार। अपने चाल-चलन के आधार पर दोनों सबसे बड़े राष्ट्रीय दल, कांग्रेस और भाजपा एक दूसरे की कार्बन कापी नजर आते हैं। वाम समर्थित तीसरे मोर्चे का गठन कई बार हुआ पर घटक दलों के बीच नीतिगत विरोधाभासों की वजह से यह व्यवस्था टिकाऊ नहीं हो सकी। दरअसल राष्ट्रीय नजरिया रखने वाले छोटे-छोटे दलों का महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मसलों पर सहमति बनाते हुए गठबंधन बने तो इसके टिकने की संभावना बन सकती है। परन्तु हमारे देश में इधर कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव बढ़ा है, जिनका क्षेत्रीय नजरिया और अपने क्षेत्रीय हित राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाले एक राजनीतिक विकल्प के उभरने और उससे भी ज्यादा उसके टिकाऊ होने में समस्याएं खड़ी करते हैं। इसीलिए बार-बार चर्चा होने के बावजूद कोई नया राजनीतिक मोर्चा नहीं बन पा रहा है।

पर सवाल तो यह है कि एक नए विकल्प की जरूरत क्यों महसूस हो रही है। दो दशक पूर्व हमारे देश में कांग्रेस के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने महत्वपूर्ण नीतिगत बदलाव करते हुए नियंत्रित अर्थ व्यवस्था को उदारीकरण की राह पकड़ा दी। इस नीति से हमारी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ तो जरूर हुई, पर इसका ज्यादा लाभ देश के अमीरों को मिला। बाद में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग गठबंधन की सरकार बनी, तो उसने भी इसी नीति का अनुसरण करते हुए इसे आगे बढ़ाया गया। इस दरम्यान देश में अमीर-गरीब के बीच की खाई ज्यादा तेजी से बढ़ी, इसकी वजह चाहे नीतियों की खामी रही हो या इसके क्रियान्वयन में कमी। जैसे-जैसे देश का एक छोटा वर्ग समृद्ध हुआ, हमारे सत्तासीनों ने शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक सर्वोत्कृष्ट सेवा पाने का अधिकारी सिर्फ इसी वर्ग को मान लिया। सार्वजनिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था की अनदेखी कर इस वर्ग के लिए देश में वातानुकूलित परिसर में शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी सेवाओं की व्यवस्था करने में सरकार जुट गई। देश के संसाधनों पर एक छोटे वर्ग का दूसरे कमजोर-गरीब बड़े वर्गा की तुलना में ज्यादा अधिकार स्थापित कर दिया गया। सरकार ने प्रति दिन बीस रुपया पर गुजर-बसर करने वाली देश की 70% आबादी को कई कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत प्रति माह चार-पाच सौ रुपए पाने का हकदार भर बना छोड़ा। इस व्यवस्था में भी बिचौलियों, अधिकारियों एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं को खुले-आम लूट मचाने की छूट दे दी गई। आम आदमी के लिए लुभावने नारों के साथ योजनाएं घोषित की जाती रहीं, उन पर खर्च करने के लिए बड़ी-बड़ी रकम का प्रावधान किया गया, पर उन्हें पीने के पानी से लेकर स्वच्छता तक, जो भी थोड़ा बहुत उपलब्ध हो पाया, उसे घटिया स्तर का ही माना जा सकता है। वर्ग विभेद दूर करने एवं समान अवसर उपलब्ध कराने में असफलता से इन दोनों बड़े राजनीतिक गठबंधनों से जनता में भारी निराशा है। विकल्पहीनता की वजह से भले ही इन्हें वोट मिल जाएं पर देश बेहतर भविष्य के लिए जब एक नए राजनीतिक विकल्प के उभरने की प्रतीक्षा कर रहा है। देश में अब भी बहुत सारे छोटे-छोटे दल सैद्धांतिक एवं नैतिक प्रतिबद्धता के साथ राजनीति कर रहे हैं, पर ये राजनीति में हाशिए पर हैं। अक्सर अकेले अपने सही होने का अहंकार एवं अपने विचारों पर अड़े रहने की जिद इन्हें एक-दूसरे के नजदीक आने की राह में रुकावट बनकर खड़ी रहती है। अभी देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, आतंकवाद, पर्यावरण, गरीबी उन्मूलन, समान शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, मानवाधिकार, देश के हित के अनुरूप विदेश नीति जैसे मुद्दों पर सहमति बनाकर एवं इन्हें दृढ़ता से लागू करने के लिए ऐसे राजनेताओं को देश हित में लचीला रूख अपनाते हुए एक मंच पर आने की जरूरत है, जिससे देश अपनी वास्तविक संभावना के अनुरूप देश के तमाम नागरिकों की भागीदारी वाले मॉडल पर विकास की राह पर अग्रसर हो सके। ●

(साभार - आकाशदीप)

## सीडी समीक्षा

# समाज गौरव गान

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना की ओर से 'समाज गौरव गान' के नाम से एक सीडी तैयार की गयी है। इस सीडी में संगीतमय गीत के माध्यम से राजस्थान के रणवीरों एवं समाज की गौरव गाथा का बड़े ही मधुर एवं सुंदर तरीके से वर्णन किया गया है। इसके गीतकार सुशील गुप्ता ने जहाँ शब्दों को एक नयी आशा प्रदान की है वहीं इस गीत को विशु दत्ता ने बड़ा ही मधुर सुर प्रदान किया है।

**मारवाड़ी हैं हम, कर्म ही हमारा धर्म**
**भारत की शान हैं, मारवाड़ की पहचान हैं हम**
**देश धर्म के हम पुजारी, संस्कारों के आभारी**
**कांटो से खेल-खेल, दुःखो को झेल-झेल**
**अपने देश को नित बनाते सुंदरतम**

अमरकांत का संगीत व सीताराम सिंह का संगीत संयोजन सराहनीय है। लेकिन निःसंदेह इस प्रयास का श्रेय प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय किशोरपुरिया को भी जाता है। उल्लेखनीय है कि 'समाज गौरव गान' सीडी का लोकार्पण अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के कर कमलों से बीते दिनों हरिद्वार में आयोजित सम्मेलन में ही हुआ था।

– **अनंतशिव**

## गीत-कविता

### स्वागत थारो आज, पधारो म्हारा पावणा

म्हारे मनड़ा में उठे है हिलौर
पधारो म्हारा पावणा।

आप पधारया शिवसागर में।
मनड़ा में उमंग जगाई
पधारो म्हारा पावणा।।

रोली, चावल, तिलक लगांवा
फूल बरसावा आज
पधारो म्हारा पावणा।।

संगी - साथी सागे लाया
सबका मान बढ़ाया
पधारो म्हारा पावणा।।

हम सब "बिहु" में चहक रहे हैं,
आप भी दमको भारी
पधारो म्हारा पावणा।।

"असन" की "धरती" अपनी "जननी"
जननी को करते प्रणाम।।
"स्वागत थारो आज, पधारो म्हारा पावणा"

– **श्रीमती माला सिंघल**
एटी रोड, शिवसागर (असम)

## हंसगुल्ले

एक दिन बन्सीलालजी री जोडायत सूं जबरी बात-बंतळ होयगी और रीस म आयर ब्याकी जोडायत बोली – "हो जीऽऽ जद थै देसी दारू पियर आवंता तो मनै पारौ केव्हता, जद थे अंग्रेजी पियर आवंता तो डार्लिंग केव्हता। पर आज कांई पीयर आया जो मनै चुडैल कै रया हो?" बन्सीलालजी – "आज म की भी पियर कोनी आयो, बल्की होश म हूं।"

○ ○ ○

किशनजी रीस म एक नाई री दुकान पर जायर कुर्सी पर बिराजमान होयग्या, जना नाई पुछो – "साब बाल कित्ता छोटा करूं?" किशनजी रीस म ही बोल्या – "इत्ता छोटा कर की लुगावडी रा पकड म नही आवनू चायज।"

viom
NETWORKS

# A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

**First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification**

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 May, 2012
RNI Regd. No. 2868/68







SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

*From :*
**All India Marwari Federation**
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com